व्याकरण वृक्ष 6

शिक्षक-दर्शिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

पाठ योजनाः 1

आज की अवधारणा

छात्रों को भाषा व उसके रूपों का परिचय देते हुए भाषा मातृभाषा, प्रादेशिक, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के बारे में जानकारी प्रदान करना। बोली, लिपि तथा व्याकरण से भी अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र दैनिक जीवन में भाषा के दोनों रूपों का प्रयोग करते रहते हैं। वे जानते हैं कि विश्वभर में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं तथा भारतीय संविधान ने कई भाषाओं को मान्यता प्रदान की है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- भाषा के रूपों का भली–भाँति प्रयोग करने में,
- मातृभाषा, प्रादेशिकभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा को उदाहरण सहित परिभाषित करने में,
- संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के नामों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- मातृभाषा, प्रादेशिकभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा में अंतर कर सकेंगे।
- लिपि का ज्ञान कराते हुए भिन्न–भिन्न भाषाओं की लिपियों से अवगत कराना।
- छात्रों को व्याकरण का ज्ञान कराते हुए शुद्ध रूप से बोलने तथा लिखने के लिए प्रेरित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर भाषा के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उन्हें शुद्ध वाचन एवं लेखन हेतु प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

इंटरनेट की सहायता से किन्हीं दस देशों की भाषा तथा उनकी लिपियों के नाम ढूँढकर लिखिए।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध भाषा एवं व्याकरण संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर भाषा के शुद्ध वाचन एवं लेखन से संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- विभिन्न भाषाओं व उनकी लिपियों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें वह जानकारी दी जा रही है जो उनके पास पहले से ही है, किंतु वे पूर्णतः नहीं जानते। इन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को भाषा के संबंध में बताना। उनमें विभिन्न भाषाओं को जानने की उत्सुकता जागृत करते हुए शुद्ध लेखन व वाचन के लिए प्रेरित करना।	• छात्रों, भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों एवं विचारों को प्रकट करते हैं तथा दूसरों के भावों तथा विचारों को समझते हैं। • भाषा के दो रूपों में पहला रूप मौखिक के अंतर्गत मन के विचार बोलकर प्रकट किए जाते हैं तथा लिखित रूप के अंतर्गत विचारों और भावों का प्रकटीकरण लिखकर किया जाता है। • तत्पश्चात् छात्रों को बताएँ कि मातृभाषा अपनी माँ तथा परिवार से सीखी गई भाषा होती है। वहीं प्रादेशिक भाषा प्रदेश विशेष में बोली जाने वाली भाषा होती है। राष्ट्रभाषा संवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषा होती है जो राष्ट्र के अधि कांश प्रदेशों में बहुमत द्वारा बोली तथा समझी जाती है। • उन्हें राजभाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के बारे में बताएँ कि राजभाषा वह भाषा है, जिसका प्रयोग देश के कार्यालयों में कामकाज के लिए किया जाता है जबकि विश्व के दो अथवा दो से अधिक राष्ट्रों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहलाती है। • भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है। उदाहरणार्थः भोजपुरी, हरियाणवी आदि। • अब उन्हें लिपि तथा व्याकरण के बारे में बताएँ कि प्रत्येक भाषा में लिखने के कुछ चिह्न निश्चित होते हैं जिन्हें लिपि कहा जाता है। वहीं,वह शास्त्र व्याकरण कहलाता है जो हमें किसी भी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है ताकि हम उसे शुद्ध रूप से बोल व लिख सके।

	• उन्हें यह भी स्पष्ट करें कि व्याकरण के तीन अंग होते हैं–वर्ण-विचार, शब्द-विचार तथा वाक्य-विचार।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. मातृभाषा किसे कहते हैं?

....

....

ख. राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अंतर बताइए?

....

....

....

ग. अंतर्राष्ट्रीय भाषा किसे कहते हैं?

....

....

घ. बोली तथा भाषा में अंतर बताइए?

....

....

ङ. व्याकरण के कितने अंग होते हैं? बताइए।

....

....

2. निम्नलिखित क्रियाओं में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग होता है? सही (✓) का चिह्न लगाकर बताइए–

क. वाद-विवाद प्रतियोगिता में बोलना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा
ख. ई-मेल करना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा
ग. दादी जी का कहानी सुनाना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा
घ. रेडियो से गाने सुनना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा
ङ. नेता जी का भाषण सुनना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा
च. डायरी लिखना	लिखित भाषा	मौखिक भाषा

3. उपयुक्त शब्द का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

क. व्याकरण भाषा की शुद्धता के नियम सिखाने वाला .... है।

ख अंग्रेज़ी भाषा की लिपि .... है।

ग. .... का प्रयोग सरकारी कार्यों में नहीं होता।

घ. हिंदी को राष्ट्रभाषा तथा .... दोनों का स्थान प्राप्त है।

ङ. भाषा की अपेक्षा .... का क्षेत्र सीमित है।

4. निम्नलिखित भाषाएँ किन प्रदेशों में बोली जाती हैं? मिलान कीजिए–

	भाषा	**प्रदेश**
क.	गुजराती	i. पश्चिम बंगाल
ख.	पंजाबी	ii. केरल
ग.	तमिल	iii. जम्मू–कश्मीर
घ.	कश्मीरी	iv. गुजरात
ङ.	मलयालम	v. तमिलनाडु
च.	बांग्ला	vi. पंजाब

वर्ण-विचार

पाठ योजनाः 2

आज की अवधारणा

छात्रों को वर्ण, वर्णमाला व वर्णों के भेदों के बारे में बताकर स्वर व उसके भेद तथा व्यंजन भेदों से परिचित कराना। संयुक्त व्यंजन, द्‌वित्व व्यंजन व संयुक्ताक्षर की परिभाषा उदाहरण सहित समझाना। मात्राओं का बोध कराना व वर्ण-विच्छेद तथा उच्चारण स्थान के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि मुख से निकलने वाली ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे वर्ण कहते हैं तथा किसी भाषा के समस्त वर्णों को समूह में लिखना उस भाषा की वर्णमाला कहलाती है। वर्ण भाषा की बुनियाद होते हैं। इन्हीं के माध्यम से शब्दों की रचना होती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- हिंदी वर्णमाला के वर्णों के बारे में जानने में,
- अनुस्वार व अनुनासिक ध्वनियों के बीच का अंतर करने में,
- कौन-सा वर्ण किस उच्चारण स्थान से बोला जाता है, यह जानने में,
- संयुक्त व्यंजन, द्‌वित्व व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर की पहचान करने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों के ह्रस्व, दीर्घ व प्लुत स्वरों में अंतर समझाना।
- इन स्वरों तथा इनकी मात्राओं की पहचान कराना।
- व्यंजन के भेदों की पहचान कराना तथा स्वर व व्यंजन संबंधी अशुद्‌धियों को बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वर्ण-विचार पाठ के उच्चारण स्थलों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

सभी उच्चारण स्थान पढ़ाने के पश्चात् छात्रों को श्यामपट्ट पर अध्यापक कुछ वर्ण लिखकर दें तथा उन्हें उस वर्ण का उच्चारण कर उसके अवयव को पहचानने के लिए कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वर्ण-विचार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वर्ण के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में वर्णों के उच्चारण-स्थान की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होते हैं। इसके खंड नहीं किए जा सकते। वहीं हिंदी की वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं, जिन्हें एक निश्चित क्रम में रखा गया है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वर्ण व उसके भेदों के संबंध में बताना। उनमें मात्रा, वर्ण-विच्छेद व उच्चारण स्थान के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, को बताएँ कि वर्ण के दो भेद होते हैं—स्वर व व्यंजन। पहले जानें कि वर्णमाला में 11 स्वर तथा 2 अयोगवाह (अं तथा अः) हैं। स्वर के तीन भेद होते हैं—ह्रस्व, दीर्घ व प्लुत। • इन तीनों की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट करने के बाद बताएँ कि ह्रस्व स्वरों की संख्या चार व दीर्घ स्वरों की संख्या सात होती है। • उसके बाद अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग के बारे में बताएँ। उन्हें समझाएँ कि इन्हें न तो स्वर तथा न ही व्यंजनों की श्रेणी में रखा जाता है। • फिर व्यंजन की परिभाषा लिखकर बताएँ कि इसके भी तीन भेद हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन व ऊष्म व्यंजन। इन तीनों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाएँ। • तत्पश्चात् संयुक्ताक्षर, संयुक्त व्यंजन व द्वित्व व्यंजन के बारे में बताएँ। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं जो दो या दो से अधिक व्यंजनों के परस्पर संयोग से बनते हैं। इसी तरह उन्हें संयुक्ताक्षर व द्वित्व व्यंजन से उन्हें परिचित कराएँ।

	• अब 'र' के विभिन्न रूपों का बोध कराते हुए इसमें रेफ़, पदेन आदि को उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करें तथा छात्रों को इनसे बने तीन-तीन शब्द लिखने को कहें। • मात्राओं का ज्ञान कराते हुए उन्हें स्पष्ट करें कि किसी व्यंजन के साथ मिलने पर स्वर का रूप बदल जाता है, स्वर का बदला हुआ रूप ही मात्रा कहलाता है। • फिर छात्रों को शब्दों का वर्ण-विच्छेद करके दिखाएँ तथा यह भी बताएँ कि इसके अंतर्गत शब्द के वर्णों (स्वर एवं व्यंजन) को अलग-अलग करके लिखा जाता है। • उन्हें बताएँ कि व्यंजनों का उच्चारण-स्थान भिन्न-भिन्न होता है जैसे– त, थ, द, ध, न दंत से बोलने के कारण दंत्य कहलाते हैं। • सभी उच्चारण-स्थान पढ़ाने के पश्चात् छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ वर्ण लिखकर दें तथा उन्हें उस वर्ण का उच्चारण कर उसके अवयव को पहचानने के लिए कहें। • उन्हें बताएँ कि संपूर्ण विश्व में हिंदी ऐसी भाषा है, जिसे जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखा जाता है। जान लें कि हम भाषा को शुद्ध उसी स्थिति में लिख सकते हैं जब हमें उसका शुद्ध उच्चारण करना आता हो। • स्वर व व्यंजन संबंधी अशुद्धियों से बचाने के लिए उन्हें शुद्ध वाचन करने के लिए प्रेरित करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. हिंदी वर्णमाला के सभी पाँच वर्गों के वर्णों को लिखिए।

....

ख. ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत स्वरों में अंतर कीजिए।

....

ग. अनुस्वार तथा अनुनासिक ध्वनियों में भेद कीजिए।

....

घ. व्यंजनों के उच्चारण में वायु किनसे टकराकर बाहर आती है?

....

ङ. 'दन्त्य' ध्वनियाँ कौन-सी हैं?

....

च. व्यंजनों के भेदों को स्पष्ट कीजिए?

....

....

....

2. इनसे बनने वाले संयुक्त वर्ण लिखिए-

क. ज् + ञ् + अ – ....

ख. क् + ष् + अ – ....

ग. श् + र् + अ – ....

घ. त् + र् + अ – ....

3. 'र' के विभिन्न रूपों के आधार पर दो-दो शब्द लिखिए-

क. [‸] – ड्राइवर – .... , ...

ख. [⁄] – प्रथम – .... , ...

ग. [र्‍] – शर्म – .... , ...

घ. [र] – राज – .... , ...

4. निम्नलिखित शब्दों में से संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन वाले शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए-

मात्रा	अक्षर	गुब्बारा	क्षमा	कच्चा	लड्डू	पत्रिका	चच्चा
यज्ञ	अज्ञान	संयुक्ताक्षर	खट्टी	पत्ता	कक्षा	पत्र	

संयुक्त व्यंजन – ....

द्वित्व व्यंजन – ....

5. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

क. हिंदी वर्णमाला में 'अं' तथा 'अः' को .... कहा जाता है।

ख. .... स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से तिगुना समय लगता है।

ग. व्यंजनों की संख्या .... है।

घ. .... व्यंजनों के उच्चारण में श्वास की गति अंतः होती है।

ङ. .... व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के किसी-न-किसी भाग को स्पर्श करती है।

6. दिए गए वर्णों को उनके उच्चारण स्थानों से सुमेलित कीजिए-

वर्ण	**उच्चारण-स्थान**
क. प्, भ्	i. दंत
ख. ड्, ढ्	ii. नासिका
ग. ग्, घ्	iii. कंठ
घ. ञ्, ण्	iv. तालु
ङ. ज्, झ्	v. ओष्ठ
च. त्, ल्	vi. मूर्धा

संधि

पाठ योजनाः 3

आज की अवधारणा

छात्रों को संधि व संधि-विच्छेद के बारे में बताना। उनकी परिभाषा से अवगत कराकर संधि के भेदों के नाम से परिचित कराना। स्वर, व्यंजन व विसर्ग संधि में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करना। स्वर संधि के भेदों के बारे में बताना तथा व्यंजन व विसर्ग संधि के नियमों को समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि वर्ण छोटी से छोटी ध्वनि होते हैं, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते। वे वर्ण के भेदों स्वर व व्यंजन से भली-भाँति परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- संधि के बारे में सोचने और विचार करने में,
- शब्दों को ध्यान से सुनकर उसका संधि-विच्छेद व पुनः संधि करने में,
- संधि होने पर ध्वनियाँ परिवर्तित होती हैं, लेकिन उनमें होने वाला परिवर्तन सदैव एक-सा नहीं होता, यह समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि दो वर्णों के परस्पर मेल से विकार उत्पन्न होता है।
- भाषा में संधि व संधि-विच्छेद की महत्ता समझाना।
- स्वर संधि के भेदों से परिचित कराना तथा व्यंजन व विसर्ग संधि के नियमों से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में संधि विषय को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं से ऐसे पाँच-पाँच शब्द लिखिए, जिनकी संधि व उनका संधि-विच्छेद हो सकता है।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध संधि संबंधी व्याकरण की पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संधि के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संधि, संधि के भेद व संधि-विच्छेद की जानकारी लिखे हुए चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'संधि' के बारे में जानकारी दी जा रही है। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्यः छात्रों को संधि के बारे में बताना। उनमें संधि-विच्छेद व उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि संधि 'मेल' या 'जोड़' है। जब कभी-कभी दो ध्वनियाँ निकट आकर आपस में मिल जाती हैं और नवीन रूप धारण करती हैं, इसे संधि कहते हैं। • वहीं संधि नियमों के आधार पर मिलाए गए वर्णों को पहले जैसी स्थिति में ले आना ही संधि-विच्छेद कहलाता है। • उन्हें बताएँ कि संधि सदैव दो ध्वनियों में ही होती है, शब्दों में नहीं होता और इनमें होने वाला परिवर्तन कभी पहली ध्वनि में तो, कभी दूसरी या दोनों में भी हो सकता है। • फिर उन्हें अवगत कराएँ कि संधि के तीन भेद होते हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि व विसर्ग संधि। • दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के भी पाँच भेद हैं–दीर्घ संधि, गुण संधि, यण संधि, वृद्‌धि संधि तथा अयादि संधि। इन पाँचों भेदों को उदाहरण सहित श्यामपट्ट पर स्पष्ट करने के बाद उन्हें कुछ शब्द लिखवाएँ तथा उनका संधि-विच्छेद करके सामने उसके भेद का नाम लिखकर लाने को कहें। • छात्रों को बताएँ कि व्यंजन में किसी व्यंजन या स्वर के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। उन्हें व्यंजन संधि के सभी नियमों से अवगत कराएँ व उदाहरण स्पष्ट कर कुछ शब्दों का संधि-विच्छेद करवाएँ।

	• अंत में उन्हें विसर्ग संधि के नियमों को समझाएँ तथा बताएँ कि विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा छात्रों को विसर्ग संधि स्पष्ट रूप से समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. संधि तथा संधि-विच्छेद किसे कहते हैं?

....

ख. स्वर संधि को परिभाषित करते हुए इसके पाँचों भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

ग. गुण संधि में ध्वनियों के मेल से कौन-कौन से विकार आते हैं?

....

....

....

घ. अयादि संधि में निकटतम ध्वनियों के मेल से कौन-से विकार उत्पन्न होते हैं? अयादि संधि के पाँच उदाहरण दीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-

क. मतैक्य – ________ + ________ ख. उपर्युक्त – ________ + ________

ग. मात्राज्ञा – ________ + ________ घ. नायक – ________ + ________

ङ. शीतर्तु – ________ + ________ च. सूर्योष्मा – ________ + ________

3. शुद्ध संधि रूप के आगे सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	सर्व	+	उदय	= सर्वउदय	सर्वोदय
ख.	लंका	+	ईश	= लंकेश	लंकाइश
ग.	विधु	+	उदय	= विधुदय	विधूदय
घ.	चरण	+	अमृत	= चरणअमृत	चरणामृत
ङ.	कवि	+	इंद्र	= कवींद्र	कविंद्र
च.	सु	+	आगत	= सुगत	स्वागत

4. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए-

क. निः + पाप – ________ ख. उत् + लंघन – ________

ग. मनः + योग – ________ घ. उत् + श्वास – ________

ङ. एक + एक – ________ च. पौ + अक – ________

5. निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाइए-

क. स्वरों का मेल स्वर संधि कहलाता है।

ख. दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।

ग. व्यंजन संधि में केवल स्वरों का मेल होता है।

घ. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं।

ङ. संधि-विच्छेद होने पर ध्वनियाँ परिवर्तित हो जाती हैं।

शब्द-विचार

पाठ योजनाः 4

आज की अवधारणा

छात्रों को शब्द तथा पद का अंतर स्पष्ट करते हुए उत्पत्ति अथवा स्रोत, अर्थ, प्रयोग तथा बनावट/रचना के आधार पर शब्दों के भेदों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को यह ज्ञात है कि वर्णों को मिलाकर शब्द बनते हैं तथा वाक्य में प्रयुक्त होने पर इन्हें पद कहा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र विभिन्न प्रकार के शब्दों को जान सकेंगे तथा वे निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- शब्द तथा पद के अंतर को समझने में,
- विभिन्न आधारों पर किए गए शब्दों के वर्गीकरण को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विभिन्न प्रकार के शब्दों को जानकर उनके मध्य अंतर समझने की योग्यता का विकास करना।
- विभिन्न आधारों पर किए गए शब्दों के वर्गीकरण से बने भिन्न-भिन्न शब्दों की पहचान करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में शब्द-विचार के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

हिंदी के समाचार-पत्र से ऐसे पाँच-पाँच शब्द ढूँढकर लिखिए जो उत्पत्ति/स्रोत, अर्थ, बनावट/रचना तथा प्रयोग के आधार पर किए गए भेद को दर्शाते हैं।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-विचार की जानकारी संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर शब्द-विचार संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- शब्दों के वर्गीकरण की जानकारी देता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी।उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि वर्णों का सार्थक समूह 'शब्द' कहलाता है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर ये पद का रूप ले लेते हैं। उन्हें बताएँ कि इन शब्दों का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है जैसे–उत्पत्ति/ स्रोत, अर्थ, प्रयोग तथा बनावट/ रचना के आधार पर।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को शब्दों के वर्गीकरण के आधारों के बारे मेंजानकारी देना तथा विभिन्न भेदों के शब्दों की पहचान कराना।	• छात्रों, उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्दों के चार भेद किए गए हैं–तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी। • पुस्तक की सहायता से इस आधार पर किए गए भेदों को स्पष्ट कर उन्हें अधिक-से-अधिक उदाहरण दें। • उन्हें बताएँ कि अर्थ के आधार पर शब्दों को सार्थक व निरर्थक शब्दों में वर्गीकृत किया गया है। • दोनों की परिभाषा अधिक-से-अधिक उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • यह भी स्पष्ट करें कि व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों के मध्य अंतर स्पष्ट करें। • तत्पश्चात् छात्रों को बताएँ कि बनावट या रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं–रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़। तीनों का अंतर उन्हें उदाहरण देते हुए समझाएँ। • अंततः छात्रों को बताएँ कि प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो वर्गों में बाँट सकते हैं–विकारी तथा अविकारी। दोनों के मध्य का अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. सार्थक तथा निरर्थक शब्द किन्हें कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ख. उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्दों के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ शब्दों में अंतर बताइए।

....

....

....

घ. विकारी तथा अविकारी शब्द किन्हें कहते हैं?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित तत्सम शब्दों के तद्‌भव रूप पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	आम्र बहुत मीठा था।	अमरक	आम	आर्म
ख.	पिताजी ने क्षीर खाई।	खीर	चीर	शीर
ग.	हमें रात्रि में जल्दी सोना चाहिए।	रात्रि	रातृ	रात
घ.	दधि से स्वादिष्ट लस्सी बनती है।	दुग्ध	दधी	दही
ङ.	हमने नया गृह खरीदा।	घर	ग्रह	ग्रिह

3. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

क.	तूफ़ान	i.	चीनी
ख.	बिस्कुट	ii.	पुर्तगाली
ग.	इरादा	iii.	जापानी
घ.	शादी	iv.	अंग्रेज़ी
ङ.	तमाशा	v.	फ़रसी
च.	तौलिया	vi.	तुर्की
छ.	रिक्शा	vii.	अरबी

4. निम्नलिखित शब्दों को पहचानकर उनके सामने रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ लिखिए–

क.	राजकुमारी –	__________	ख.	फूल –	__________
ग.	पुस्तक –	__________	घ.	प्रयोगशाला –	__________
ङ.	पीतांबर –	__________	च.	पंकज –	__________

अनेकार्थी शब्द — पाठ योजनाः 5

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेकार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से इतर अनेकार्थी शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि अर्थ के आधार पर शब्दों को दो भागों मे बाँटा जाता है–सार्थक तथा निरर्थक। अनेकार्थी शब्द इन्हीं सार्थक शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अनेकार्थी शब्द को परिभाषित करने में,
- इन शब्दों के अर्थों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर अनेकार्थी शब्द का प्रयोग करना।
- इन शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेकार्थी शब्दों के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इनके अर्थों को समझने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को दो टीमों में विभाजित करके अध्यापक कुछ शब्द बोलें जिसमें एक टीम उसका अर्थ बताएँ तथा दूसरी टीम उस अर्थ से वाक्य बनाएँ। इस प्रकार खेल-खेल में अनेकार्थी शब्दों तथा उनके अर्थ का ज्ञान कराया जा सकेगा।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- अनेकार्थी शब्दों के अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर अनेकार्थी शब्दों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनेकार्थी शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को अनेकार्थी शब्द तथा उनके अर्थों को जानने के लिए उत्सुक बनाना।	• छात्रों, जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। • उन्हें पाठ से अनेकार्थी शब्दों का वाचन कराते हुए उनका अर्थ स्पष्ट करें। • सभी शब्दों का वाचन कराने के पश्चात् उन्हें कुछ शब्द दें तथा छात्रों से उनका अर्थ जानने का प्रयास करें। • छात्रों से इस प्रकार के प्रश्न पूछकर उनके वाचन एवं चिंतन कौशल में वृद्धि करते हुए उनके आत्मविश्वास को बल प्रदान करें। • अंतत: अध्यापक कक्षा को दो समूहों में विभाजित करके दोनों टीमों के सामने कोई शब्द बोलें तथा जिस टीम के छात्र पहले हाथ उठाएँ उस टीम को अर्थ बताने का अवसर प्राप्त हो। गलत अर्थ बताने पर दूसरी टीम से पूछा जाएगा।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के अनुचित अर्थ वाले शब्दों में गलत (✗) का चिह्न लगाएँ-

क.	गौ	-	वाणी	पाणि	गाय
ख.	वर	-	दूल्हा	श्रेष्ठ	वार
ग.	रक्त	-	रात	खून	सिंदूर
घ.	हंस	-	हँस	ब्रह्मा	जीवात्मा
ङ.	वंश	-	वश	बाँस	खानदान
च.	अलि	-	भँवरा	बिच्छू	आलता

2. नीचे लिखे शब्दों से ऐसे दो-दो वाक्य बनाइए जिससे इनके अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो जाए-

क. गुरु → ....
→ ....

ख. ताल → ....
→ ....

ग. पट → ....
→ ....

घ. कल → ....
→ ....

3. रेखांकित शब्दों के उचित अर्थ में सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	मुझे <u>आम</u> बहुत पसंद है।	सामान्य	फल का नाम
	यह कोई <u>आम</u> पुरुष नहीं है।	सामान्य	फल का नाम
ख.	आज <u>अंबर</u> का रंग साँवला लग रहा है।	आकाश	कपड़ा
	उसने अपने जन्मदिन पर हरे <u>अंबर</u> पहने थे।	आकाश	कपड़ा
ग.	मुझे छोटे बच्चे को <u>अंक</u> में लेना अच्छा लगता है।	संख्या	गोद
	मेरे हिंदी विषय में अच्छे <u>अंक</u> आए हैं।	संख्या	गोद
घ.	मैं <u>कल</u> घूमने जाऊँगी।	मशीन	आने वाला कल
	आकाश <u>कल</u> ठीक करने का काम करता है।	मशीन	आने वाला कल

एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द

पाठ योजनाः 6

आज की अवधारणा

छात्रों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से अतिरिक्त एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि हिंदी भाषा में कुछ ऐसे होते हैं, जो देखने में एक से प्रतीत होते हैं परंतु उनमें थोड़ा अंतर होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों को परिभाषित करने में,
- इन शब्दों के अर्थों को समझने में,

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- वाक्य प्रयोग के दौरान अर्थ को ध्यान में रखते हुए उचित शब्द का प्रयोग करना।
- दैनिक जीवन में एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों की महत्ता व उपयोगिता समझना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक कक्षा में कुछ शब्दों की परचियाँ बनाएँ तथा एक-एक छात्र को बुलाकर परचियाँ उठवाएँ तथा फिर उन्हें उसका अर्थ बताने के लिए प्ररित करें। इससे छात्रों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों का ज्ञान होगा।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित व्याकरण की पुस्तकें।
- कक्षा में एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थ की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्दों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द तथा उनके अर्थों को जानने के लिए उत्सुक बनाना।	• छात्रों, कुछ शब्द देखने में एक जैसे लगते हैं। किंतु उनमें कुछ भिन्नता होती है। ऐसे शब्दों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं। • सर्वप्रथम उन्हें यह समझाएँ कि ये समानार्थी नहीं होते हैं। इन शब्दों को ध्यान से देखने पर इनके अंतर का पता चलता है। • इनके प्रयोग में भूल न हो इसके लिए इनकी अर्थ-भिन्नता को जानना अति आवश्यक है। • छात्रों को अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करें। • अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ ऐसे शब्द लिखें तथा उनसे आपसी बातचीत द्वारा उनके अर्थ समझाकर उन शब्दों व उसके अर्थों को अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखकर लाने को कहें। • उनसे अलग-अलग शब्द बोलकर उनके अर्थ बताने संबंधी कोई गतिविधि भी करवाई जा सकती है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए-

क. हमें अपने छोटों के प्रति .... का भाव रखना चाहिए। (वात्सल्य / स्नेह)

ख. हमें धन का .... नहीं करना चाहिए। (व्यय / अपव्यय)

ग. रामेश्वर ने निर्धन छात्र को अपनी .... दे दी। (पुस्तक / ग्रंथ)

घ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के .... पर देशभर में शोक व्यक्त किया गया। (मृत्यु / निधन)

ङ. दिल्ली में .... निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। (अपराध / पाप)

च. भारत देश में नीम का .... कई हजारों सालों से किया जा रहा है। (प्रयोग / उपयोग)

2. शब्दों का अर्थ तथा उनके वाक्य प्रयोग द्वारा दिए गए शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए–

क.	पत्नी	–	....	....
	स्त्री	–	....	....
ख.	ईर्ष्या	–	....	....
	द्वेष	–	....	....
ग.	दया	–	....	....
	कृपा	–	....	....
घ.	निर्णय	–	....	....
	न्याय	–	....	....

3. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

क.	स्त्री	i.	इन्साफ़
ख.	श्रद्धा	ii.	साधारण खर्च
ग.	चेष्टा	iii.	जीवन का एक भाग
घ.	अवस्था	iv.	बड़ों या श्रेष्ठ लोगों के प्रति आदर-भाव
ङ.	न्याय	v.	कोई भी नारी
च.	व्यय	vi.	हरकत

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

पाठ योजनाः 7

आज की अवधारणा

छात्रों को श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए तथा पाठ से अतिरिक्त श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि कुछ शब्द सुनने व पढ़ने में लगभग समान प्रतीत होते हैं, लेकिन उनमें सूक्ष्म अंतर होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को परिभाषित करने में,
- इन शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा में अर्थ को ध्यान में रखते हुए उचित शब्द का वाक्य में प्रयोग करना।
- दैनिक जीवन में श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों की महत्ता व उपयोगिता समझना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को दो समूहों में विभाजित करें। एक समूह से कोई छात्र शब्द बोलेगा व दूसरे समूह से अन्य छात्र उसका अर्थ बोलेगा। फिर उसके बाद दूसरे समूह का छात्र शब्द बोलेगा और पहले समूह से कोई छात्र उसका अर्थ बोलेगा। इस तरह से छात्र श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को अच्छी तरह से समझ पाएँगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द तथा उनके अर्थों को जानने के लिए उत्सुक बनाना।	• छात्रों को बताएँ कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो बोलने और सुनने में एक जैसे लगते हैं, परंतु उनकी वर्तनी और अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। इस तरह के शब्दों को श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। • उन्हें अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को स्पष्ट करने का प्रयास करें। जैसे-''हंस सफ़ेद रंग का पक्षी होता है।'' तथा ''जोकर को देखकर सभी हँस पड़े।'' आपने देखा की इन दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द सुनने और बोलने में समान लगते हैं, किंतु उनके अर्थ में भिन्नता है। • अध्यापक शुद्ध उच्चारण के माध्यम से इन शब्दों के बीच के अंतर को स्पष्ट करें तथा छात्रों को इनके अर्थ से भी परिचित कराएँ। • पाठितांश का वाचन कर छात्रों को इन शब्दों के अर्थों का ज्ञान कराते हुए इनके मध्य के अंतर को समझने के लिए प्रेरित करें। • श्यामपट्ट पर एक वर्ग-पहेली बनाकर उसके भीतर उन्हें कुछ शब्द देते हुए उसके श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द ढूँढने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. रेखांकित शब्दों को सही करके वाक्य दोबारा लिखिए।

क. सोनाक्षी पूर्व दिशा की और जा रही थी।

....

ख. सौरमंडल के सभी गृह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।

....

ग. विहार की राजधानी पटना है।

....

घ. छात्र की बात सुनकर अध्यापिका हंस पड़ी।

....

ङ. प्यासे कौवे ने पाणि पीकर अपनी प्यास बुझाई।

....

2. कोष्ठक में दिए गए सही शब्दों से खाली स्थान भरिए-

क. अंग्रेज़ों ने भारत पर कई वर्षों तक किया। (राज़ / राज)

ख. गलत संगत में पड़कर व्यक्ति की भ्रष्ट हो जाती है। (मति / मत)

ग. के करतब देखकर बच्चे हँस पड़े। (बालू / भालू)

घ. बर्फ़ जब पिघल जाती है तब वह ठोस से अवस्था में परिवर्तित हो जाती है। (द्रव्य / द्रव)

ङ. मंदिरों में प्रतिदिन कीर्तन - किए जाते हैं। (भाजन / भजन)

3. उचित अर्थ पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	श्याम	-	काला	☐	संध्या	☐
	शाम	-	काला	☐	संध्या	☐
ख.	सुत	-	धागा	☐	बेटा	☐
	सूत	-	धागा	☐	बेटा	☐
ग.	मातृ	-	माता	☐	केवल	☐
	मात्र	-	माता	☐	केवल	☐
घ.	श्वेत	-	पसीना	☐	सफ़ेद	☐
	स्वेद	-	पसीना	☐	सफ़ेद	☐

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ स्पष्ट हो जाए-

क. रक्त - ....

	रिक्त –	....	....
ख.	चर्म –	....	....
	चरम –	....	....
ग.	हाल –	....	....
	हॉल –	....	....
घ.	धन –	....	....
	धान –	....	....
ङ.	गदा –	....	....
	गधा –	....	....

विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

पाठ योजनाः 8

आज की अवधारणा

छात्रों को विपरीतार्थक (विलोम) शब्द का अर्थ बताते हुए पाठ तथा पाठेतर विपरीतार्थक शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि सार्थक शब्दों के अंतर्गत ही विपरीतार्थक शब्दों को रखा गया है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- विपरीतार्थक शब्द किन्हें कहा जाता है, इसे समझने में,
- दिए गए शब्दों के अर्थ समझकर उनके विलोम शब्द बनाने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर इन शब्दों का प्रयोग कर सकेंगे।
- विलोम शब्द को परिभाषित कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर विपरीतार्थक शब्दों के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए शब्दों के अर्थों को समझकर उनके विलोम शब्द बनाने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को दो टीमों में विभाजित करें। अब एक टीम से कोई छात्र एक शब्द बोलेगा जिसका विपरीतार्थक शब्द दूसरी टीम को देना पड़ेगा। तत्पश्चात् दूसरी टीम कोई शब्द बोले और पहली टीम उसका विपरीतार्थक शब्द बताएँ। इस प्रकार खेल-खेल में छात्र विलोम शब्द बनाना सीख सकेंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- विलोम शब्दों से संबंधित चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर विलोम शब्दों से संबंधित वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'विपरीतार्थक (विलोम) शब्द' के साथ की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों के भीतर शब्दों का अर्थ समझने तथा उनके उपयुक्त विलोम शब्द बताने हेतु उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्द अर्थ की दृष्टि से उलटे अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें 'विलोम' या 'विपरीतार्थक' शब्द कहते हैं। • विलोम शब्दों का युग्म परस्पर एक-दूसरे का विरोधी होता है। • उन्हें स्पष्ट करें कि दो विपरीत स्थितियाँ ही जीवन बताती हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना कर पाना असंभव है। • अध्यापक पाठ में दिए गए विलोम शब्दों का वाचन छात्रों से ही करवाएँ तथा वाचन के बाद उनसे प्रश्न करें– (i) 'दुष्ट' शब्द का विलोम शब्द बताइए। (ii) 'कृतज्ञ' के लिए विलोम शब्द दीजिए। • पाठ से इतर विलोम शब्दों से भी छात्रों को परिचित कराएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

क. आस्तिक – ____________

ख. सनाथ – ____________

ग. उत्तीर्ण – ____________

घ. मानव – ____________

ङ. लौकिक – ____________

च. दुर्भाग्य – ____________

2. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पूर्ति कीजिए-

क. हमें वीर बनना चाहिए, न कि।

ख. हमें आय के अनुसार ही करना चाहिए।

ग. हमें अपने ज्ञान में वृद्धि करके को दूर करना चाहिए।

घ. प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में नैतिक मूल्यों का पालन करना चाहिए, न कि ।

ङ. निरक्षर व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर बनता है।

3. निम्नलिखित शब्दों के उपयुक्त विलोम शब्द पर घेरा लगाइए-

क.	आदर	–	अनदर	☐	अनादर	☐
ख.	क्रय	–	प्रक्रय	☐	विक्रय	☐
ग.	धर्म	–	अधर्म	☐	धार्मिक	☐
घ.	जंगम	–	जंगल	☐	स्थावर	☐
ङ.	राजा	–	रंक	☐	रानी	☐

पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द

पाठ योजनाः 9

आज की अवधारणा

छात्रों को पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से अतिरिक्त पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण देना व उसकी परिभाषा से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्‌यार्थी इस बात से परिचित हैं कि हिंदी भाषा में कुछ शब्दों के एक जैसे मिलते-जुलते अर्थ होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- पर्यायवाची (समानार्थक) शब्दों को परिभाषित करने में,
- पर्यायवाची शब्दों के मिलते-जुलते अर्थों को समझने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- वाक्य प्रयोग के दौरान अर्थ को ध्यान में रखकर उचित शब्द का प्रयोग करना।
- दैनिक जीवन में पर्यायवाची (समानार्थक) शब्दों की महत्ता व उपयोगिता समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में पर्यायवाची शब्दों व उनके अर्थों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर एक वर्ग पहेली बनाए तथा छात्रों को कुछ शब्द लिखवाकर उस वर्ग-पहेली को उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर उसमें से उन शब्दों के पर्यायवाची शब्द ढूँढकर लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में पर्यायवाची शब्दों से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में पर्यायवाची शब्दों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'पर्यायवाची शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को पर्यायवाची शब्द तथा उनके समान अर्थों को जानने के लिए उत्सुक बनाना।	• छात्रों को बताएँ कि जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि इन शब्दों के अर्थ में समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थानों पर अच्छा नहीं लगता–कहीं कोई शब्द ठीक बैठता है और कहीं कोई। प्रत्येक शब्द की महत्ता विषय और स्थान के अनुसार होती है। • अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा अध्यापक पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग को विद्यार्थियों को बताएँ। • उन्हें बताएँ कि अपनी रचना को अच्छा बनाने के लिए हमें सही स्थान पर सही शब्द का प्रयोग करना चाहिए। • किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की अधिकता रहती है। जो भाषा जितनी सम्पन्न होगी। उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। • श्यामपट्ट पर अलग-अलग शब्द लिखकर या चित्र दिखाकर अध्यापक छात्रों से उसके पर्यायवाची अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखने के लिए कहें और बाद में उसकी प्रतिपुष्टि करें। • छात्रों को बताएँ कि पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से भाषा में सुंदरता और चमत्कार पैदा हो जाता है। उनका इससे शब्द भंडार बढ़ता है। इसलिए सभी को इनका ज्ञान होना आवश्यक है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. पर्यायवाची शब्दों का मिलान कीजिए–

क.	दिन	राका
ख.	पत्नी	विहग
ग.	मान	शैल
घ.	रजनी	सहधर्मिणी
ङ.	चंद्रमा	राकेश
च.	पर्वत	दिवस
छ.	पक्षी	सम्मान

2. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

क. सरस्वती – ________, ________

ख. शरीर – ________, ________

ग. आँख – ________, ________

घ. कामदेव – ________, ________

ङ. अमृत – ________, ________

3. निम्नलिखित शब्दों (नामों) के लिए एक-एक चित्र बनाइए या काटकर चिपकाइए–

क.

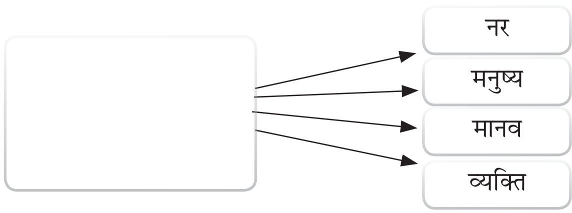

4. जो शब्द सही पर्यायवाची नहीं हैं, उन पर गलत (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	नदी	–	सरिता	वसुधा	तटिनी
ख.	ब्रह्मा	–	चातुर्य	चतुरानन	प्रजापति
ग.	भ्रमर	–	मधुप	मधुकर	मधुरा
घ.	नारी	–	नारीय	स्त्री	महिला
ङ.	दूध	–	गोरस	पय	द्रुध

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

पाठ योजनाः 10

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इस बात से अवगत हैं कि वाक्यांश वाक्य का अंश होते हैं जिनका संक्षिप्तीकरण भी किया जा सकता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को परिभाषित करने में,
- भाषा प्रयोग के दौरान अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा में क्या परिवर्तन आता है, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हुए अपनी भाषा को प्रभावी बनाना।
- वाक्यांश के लिए एक शब्द की उपयोगिता से परिचित होना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए अपनी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु इस दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक वाक्यांश की परचियाँ बनाकर टोकरी में रखें। कक्षा को चार समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह से एक प्रतिनिधि को बुलाकर परची उठवाएँ और परची में लिखे वाक्यांश के लिए एक शब्द पूछें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- वाक्यांशों के लिए एक शब्द को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की उपयोगिता एंव महत्व से परिचित कराना।	• छात्रों, अपने मन के भाव कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करना भाषा-काशै ालता का प्रतीक है। • वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा में संक्षिप्तता आती है। • उन्हें बताएँ कि वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करने से लेखन-कला उच्च स्तर की बन जाती है। • छात्रों को यह भी स्पष्ट करें कि भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता अथवा लेखक कम-से-कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर अपने विचार अभिव्यक्त कर सके। • इसे भाषा को प्रभावी तथा सरल बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ–

क. अपने मन के भाव कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करना किसका प्रतीक है?

(अ) भाषिकता (ब) भाषागत (स) भाषा-कौशलता

ख. आपके विद्यालय में प्रतिवर्ष उत्सव मनाया जाता है। इसके लिए एक शब्द का चुनाव कीजिए।

(अ) वार्षिक (ब) वार्षिकोत्सव (स) वार्षिकी

ग. वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा में क्या आती है?

(अ) संशिष्टता (ब) विश्लिष्टता (स) संक्षिप्तता

घ. भारत से जब कच्चा माल अन्य देशों को भेजा जाता है तो उस प्रक्रिया को क्या कहते हैं?

(अ) आयात (ब) निर्यात (स) कोई नहीं

ङ. 'अनाथ' के लिए उपयुक्त विकल्प क्या होगा?

(अ) जिसके माता-पिता न हों

(ब) जिसके केवल पिता न हों

(स) जिसकी केवल माता न हों

2. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

क. जो अनुकरण के योग्य हो – ______

ख. आशा से बहुत अधिक – ______

ग. जिसे सुनाई न दे – ______

घ. बुरे चरित्र वाला – ______

ङ. नष्ट होने वाला – ______

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ समझकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

क. शाश्वत – ....

ख. मांसाहारी – ....

ग. अनाथालय – ....

घ. सामाजिक – ....

ङ. निष्पक्ष – ....

4. एक शब्द के लिए वाक्यांश लिखिए–

क. शैव – ....

ख. रोमांचकारी – ....

ग. उदार – ....

घ. कृतज्ञ – ....

ङ. निरामिष – ....

5. **संकेतों के आधार पर वर्ग-पहेली पूरी कीजिए–**

	1			2		2	3	
3								
					4			
5								
						6		

बाएँ से दाएँ (→)

1. जिसे लज्जा न आती हो
2. दूसरे देश में रहने वाला
3. जिसका आकार न हो
4. जिसे अनुभव हो
5. दूर की सोचने-समझने वाला
6. जो किए गए उपकार को माने

ऊपर से नीचे (↓)

1. जिसका कोई आधार न हो
2. जो जन्म से अंधा हो
3. देश की भक्ति करने वाला
4. जिसकी कोई सीमा न हो

शब्द-निर्माण: उपसर्ग पाठ योजना: 11

आज की अवधारणा

छात्रों को उपसर्ग के बारे में बताना। उसकी परिभाषा से अवगत कराते हुए उपसर्ग के चारों भेदों से परिचित कराना। संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू के उपसर्ग तथा उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय के उदाहरणों का बोध कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि दो विभिन्न शब्दों को जोड़कर नए शब्द का निर्माण होता है। वह इस तरह से नए शब्द बनाते भी आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में उपसर्गों के बारे में जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- उपसर्गों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- हिंदी में आए उपसर्गों को कितने वर्गों में बाँटा जा सकता है, यह जानने में,
- शब्दों में आए उपसर्गों की पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि उपसर्ग क्या है तथा भाषा में इनकी कितनी उपयोगिता है।
- हिंदी में आए उपसर्गों को चारों वर्गों के अनुसार बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में उपसर्गों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

कक्षा के सभी छात्रों को एक-एक पेपर पर दस-दस ऐसे शब्द लिखकर लाने को कहें, जो उपसर्ग के योग से बने हों। उसके बाद उन पेपरों को कक्षा के अन्य छात्रों से बदलने को कहें। तत्पश्चात् उन शब्दों में से उपसर्ग व मूल शब्द अलग-अलग करके लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध उपसर्ग संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर उपसर्ग की पहचान की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में उपसर्गों के चारों वर्गों की जानकारी लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि कुछ शब्दों के आरंभ में कोई अन्य शब्द जोड़ दिया जाए तो इससे उनके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को 'वाक्य' के संबंध में बताना। उनमें वाक्य के अंग व भेदों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि हिंदी भाषा में बहुत से शब्द अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होते हैं परंतु कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनके आगे कुछ वाक्यांश लगाए जाते हैं और इनसे नए शब्द निर्मित होते हैं। जो शब्दांश शब्द के आगे जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। • छात्रों को अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा उपसर्ग व मूल शब्द को स्पष्ट करें। • उन्हें बताएँ कि हिंदी में आए उपसर्गों को चार वर्गों में बाँटा जाता है। संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू के उपसर्ग तथा उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय। • चार वर्गों के बारे में विस्तारपूर्वक बताते हुए प्रत्येक के कुछ उदाहरण देते हुए समझाएँ। • उन्हें अलग-अलग कुछ शब्द लिखवाएँ तथा उसमें उक्त उपसर्ग कौन-सा है? यह पूछें और उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में उपसर्ग छाँटकर अलग करके लिखकर लाने को कहें। • उन्हें बताएँ कि किस प्रकार उपसर्ग के प्रयोग से शब्द का अर्थ ही बदल जाता हैं। उदाहरणार्थः 'खिला' शब्द में 'अध' उपसर्ग लगाकर 'आधा खिला' शब्द बन गया।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

क. अप – ________, ________

ख. निर् – ________, ________

ग. अन – ________, ________

घ. खुश – ________, ________

ङ. ब – ________, ________

च. बद – ________, ________

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए–

क. सूरत – ________

ख. समर्थ – ________

ग. अंत – ________

घ. हरण – ________

ङ. जय – ________

च. पका – ________

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखिए–

			(उपसर्ग)	(मूल शब्द)
क.	कमज़ोर	–	....	....
ख.	परलोक	–	....	....
ग.	भरपेट	–	....	....
घ.	उनतालीस	–	....	....
ङ.	वियोग	–	....	....
च.	प्रतिकार	–	....	....
छ.	निर्दोष	–	....	....
ज.	अवगुण	–	....	....

4. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा उपसर्ग है उस पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	खुशनसीब	– नसीब	☐	खुश	☐	खु	☐
ख.	बेचारा	– बे	☐	रा	☐	चारा	☐
ग.	अधिकरण	– करण	☐	अ	☐	अधि	☐
घ.	उपवास	– उप	☐	उ	☐	वास	☐
ङ.	लापरवाह	– ला	☐	पर	☐	वाह	☐
च.	अभिशाप	– अ	☐	शाप	☐	अभि	☐

शब्द-निर्माणः प्रत्यय — पाठ योजनाः 12

आज की अवधारणा

छात्रों को प्रत्यय के बारे में बताना। उसकी परिभाषा से अवगत कराते हुए प्रत्यय के भेदों से परिचित कराना। कृत प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय में अंतर स्पष्ट करना तथा उसके उदाहरणों का बोध कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि किसी शब्द के अंत में कोई शब्दांश जोड़कर नए शब्द का निर्माण होता है, इससे उनके अर्थ में विशेषता आ जाती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- प्रत्ययों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- किन-किन शब्दों से प्रत्यय बनाए जाते हैं, ये जानने में,
- शब्दों में से मूल शब्द व प्रत्यय की पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को बताना कि प्रत्यय क्या है, तथा भाषा में इसकी कितनी उपयोगिता है।
- प्रत्यय के दोनों भेदों कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय से परिचित कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में प्रत्यय युक्त शब्दों को बनाने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

एक वर्ग-पहेली बनाकर उसमें से प्रत्यय युक्त शब्दों को ढूँढकर लिखने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध प्रत्यय संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर प्रत्यय के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में प्रत्यय बनाने वाले शब्दों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'शब्द-निर्माण:प्रत्यय' पर चर्चा की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को प्रत्यय के बारे में बताना। उनमें प्रत्यय के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, ऐसे शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। • प्रत्यय के दो भेद हैं—कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय। जो प्रत्यय क्रिया धातु रूप के बाद लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं जैसे—लिख़आवटत्रलिखावट। • जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के पीछे जुड़कर नए शब्द बनाते हैं वह तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं जैसे—मानव़तात्रमानवता। • उन्हें अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय को स्पष्ट रूप से समझाएँ। • छात्रों को बताएँ कि प्रत्यय का अर्थ कुछ भी नहीं होता है और न ही इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है। लेकिन किसी शब्द के अंत में प्रत्यय के जुड़ने से उसके अर्थ में विशेषता जरूर आ जाती है। • अब जानें कि कृत् प्रत्यय क्रिया या धातु के अंत में लगते है। जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में लगते हैं। • कृत् प्रत्यय के योग से बने शब्दों को कृपंत कहते हैं। • श्यामपट्ट पर कुछ अलग-अलग शब्दों को लिखकर छात्रों को उनमें से कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय को ढूँढकर अलग-अलग करके लिखने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा प्रत्यय प्रयुक्त है, सही (✓) का चिह्न लगाकर बताइए–

क.	बचपन	–	पन	☐	बच	☐	बच्चा	☐
ख.	शत्रुता	–	शत्रु	☐	ता	☐	आ	☐
ग.	लिखावट	–	आवट	☐	खावट	☐	लिख	☐
घ.	अपमानित	–	अप	☐	इत	☐	नित	☐
ङ.	पुजारिन	–	पूजा	☐	इन	☐	ईन	☐
च.	खिलाड़ी	–	लाड़ी	☐	खिल	☐	आड़ी	☐

2. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

क. पन – ____________ ____________

ख. इक – ____________ ____________

ग. आऊ – ____________ ____________

घ. इमा – ____________ ____________

ङ. कार – ____________ ____________

3. दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय छाँटकर अलग-अलग लिखिए–

			मूल शब्द	**प्रत्यय**
क.	सजावट	–	____________	____________
ख.	पढ़ाई	–	____________	____________
ग.	खिलौना	–	____________	____________
घ.	मैला	–	____________	____________
ङ.	रंगीन	–	____________	____________
च.	सूदखोर	–	____________	____________
छ.	अफ़ीमची	–	____________	____________
ज.	गाड़ीवान	–	____________	____________

4. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग करके लिखिए–

क. पुस्तकें – .... ख. ईमानदार – ....

ग. पीटता – .... घ. खिलौनेवाला – ....

ङ. गवैया – .... च. देवरानी – ....

5. दिए गए शब्दों में प्रत्यय जोड़कर उनसे वाक्य बनाइए।

क. उपज – ....

ख. मज़दूर – ....

ग. व्यक्ति – ....

घ. लिख – ....

ङ. शांति – ....

शब्द-निर्माणः समास पाठ योजनाः 13

आज की अवधारणा

छात्रों को समास का अर्थ बताते हुए उसके सभी भेदों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि वर्णों के मेल से 'संधि' बनती है, किंतु शब्दों के मेल से किसका निर्माण होता है, इस बात की जानकारी उन्हें नहीं है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- समास का अर्थ समझने में,
- समास के भेदों को जानने में,
- सभी भेदों के उदाहरणों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- समास शब्द को परिभाषित कर सकेंगे।
- समास के भेदों को परिभाषित करते हुए इनके उदाहरण दे सकेंगे।
- विभिन्न समासों के मध्य अंतर कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर समास के प्रति कौतूहलता उत्पन्न इसके भेदों तथा उदाहरणों को समझने का भाव विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक द्वारा बच्चों से खेल-खेल में सामासिक शब्दों का समास-विग्रह कराया जाए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर समास व उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में समास संबंधी पुस्तकें।
- समास के भेदों व उदाहरणों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि मुहावरे का प्रयोग वाक्यांश की तरह किया जाता है, जबकि लोकोक्ति अपने-आप में पूर्ण तथा स्वतंत्र होती है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों में समास व उसके भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, समास शब्द 'सम्‌आस' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है–रखना। इस विधि से बने पद समस्त पद कहलाते हैं। • समस्तपदों को अलग करने की प्रक्रिया समास विग्रह कहलाती है। • जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाए जाते हैं, तो उस प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि समास बनाने के लिए कम-से-कम दो पद होने आवश्यक हैं। • समास बनने पर बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं तथा समस्तपद में दो पद होते हैं–पूर्व पद तथा उत्तर पद। • छात्रों, समास के चार भेद हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्‌वंद्‌व तथा बहुव्रीहि समास। सभी समासों को अधिक-से-अधिक उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, उन्हें बताएँ कि तत्पुरुष समास के दो उपभेद हैं–कर्मधारय तथा द्‌विगु समास। इन दोनों को भी छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

क. समास तथा समास-विग्रह शब्दों को परिभाषित कीजिए।

....

....

ख. तत्पुरुष समास के उपभेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में अंतर बताइए।

....

घ. द्‌वंद्‌व समास को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित समस्तपदों के उचित समास में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. चतुर्भुज	–	कर्मधारय समास	☐	बहुव्रीहि समास	☐
ख. यथानियम	–	अव्ययीभाव समास	☐	द्‌विगु समास	☐
ग. महात्मा	–	कर्मधारय समास	☐	तत्पुरुष समास	☐
घ. दोपहर	–	अव्ययीभाव समास	☐	द्‌विगु समास	☐
ङ. राधा-कृष्ण	–	तत्पुरुष समास	☐	द्‌वंद्‌व समास	☐
च. चौराहा	–	बहुव्रीहि समास	☐	द्‌विगु समास	☐

3. निम्नलिखित समास-विग्रह के समस्तपद लिखिए–

(समास - विग्रह)	**(समस्तपद)**
क. जितना उचित हो	....
ख. ग्राम को गया हुआ	....
ग. देश के वासी	....
घ. क्रोध रूपी अग्नि	....
ङ. नर एवं नारी	....
च. माखन को चुराने वाला	....
छ. नीली गाय	....
ज. राजा का महल	....

4. दिए गए वाक्यों को पढ़कर तथा रेखांकित पदों को समस्तपदों में बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

क. प्रत्येक व्यक्ति को <u>क्रोध रूपी अग्नि</u> से स्वयं को सदैव दूर रखना चाहिए।

....

ख. हमें <u>रोग से मुक्त</u> रहने के लिए संतुलित भोजन करना चाहिए।

....

ग. व्यक्ति को <u>जन्म से लेकर मृत्यु तक</u> निरंतर अच्छे कर्म करते रहना चाहिए।

....

घ. सरकार ने <u>अकाल से पीड़ित</u> लोगों के लिए सेवार्थ कार्यक्रम चलाया।

....

ङ. जीवन में सुख और दुख का आना-जाना लगा ही रहता है।

....

5. सही समास-विग्रह पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	स्त्रीरत्न	–	स्त्री के समान रत्न	☐
			स्त्री रूपी रत्न	☐
ख.	त्रिकोण	–	तीन कोणों का समूह	☐
			तीन कोणों वाला समूह	☐
ग.	देशभक्ति	–	देश की भक्ति	☐
			देश के लिए भक्ति	☐
घ.	साफ़	–	सदैव साफ़	☐
			बिलकुल साफ़	☐
ङ.	गगनचुंबी	–	गगन को चूमने वाला	☐
			गगन की चुंबी	☐

संज्ञा

पाठ योजनाः 14

आज की अवधारणा

छात्रों को संज्ञा के बारे में बताना। उसकी परिभाषा से अवगत कराते हुए व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक तथा समुदायवाचक व द्रव्यवाचक संज्ञा से परिचित कराना व उदाहरणों सहित उन्हें स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी यह जानते हैं कि सभी की पहचान उनके नाम से होती है। उन्हें पता है कि नाम को ही संज्ञा कहते हैं व उसके तीन भेद हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- संज्ञा के बारे में सोचने और विचार करने में,
- तीनों भेदों में अंतर कर इनके संज्ञा शब्दों की पहचान करने में,
- द्रव्यवाचक व समुदायवाचक संज्ञा को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को संज्ञा व उसके तीनों भेदों को समझाना।
- संज्ञा व उसके भेदों की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- विभिन्न संज्ञा शब्दों को लिखकर उसका भेद पहचानने के लिए जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में संज्ञा विषय को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

श्यामपट्ट पर कोई अनुच्छेद लिखें फिर छात्रों को अनुच्छेद को अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर उसमें से संज्ञा शब्दों को ढूँढकर उनके भेदों के अनुसार अलग-अलग करके लिखने को करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध संज्ञा संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर संज्ञा के भेदों संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संज्ञा के भेदों की जानकारी लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि किसी व्यक्ति, वस्तु, गुण, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को संज्ञा के संबंध में बताना। उनमें संज्ञा के भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा से हमें विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम की जानकारी मिलती है। वहीं जातिवाचक संज्ञा से हमें किसी विशेष वस्तु, प्राणी या स्थान की तरफ संकेत न करके उनकी पूरी जाति के बारे में संकेत करते हैं। • फिर उन्हें बताएँ कि भावों को हम इंद्रियों द्वारा अनुभव कर सकते हैं, उन्हें देख या छू नहीं सकते। • तीनों भेदों को अच्छी तरह स्पष्ट करने के बाद उन्हें बताएँ कि अंग्रेज़ी व्याकरण के प्रभाव से कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद और स्वीकार करते हैं, वे हैं–समुदायवाचक एवं द्रव्यवाचक संज्ञा। • श्यामपट्ट पर समुदायवाचक संज्ञा की परिभाषा लिखकर बताएँ कि इस संज्ञा शब्द से समूह या समुदाय का बोध होता है तथा द्रव्यवाचक संज्ञा से किसी द्रव, पदार्थ या धातु का बोध होता है। • जब यह ज्ञात हो जाए कि छात्र सभी भेदों से भली-भाँति परिचित हो गए हैं तब उन्हें समझाते हुए बताएँ कि हिंदी व्याकरण के अंतर्गत समुदायवाचक तथा द्रव्यवाचक दोनों भेदों को जातिवाचक संज्ञा ही माना जाता है। • अब छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ शब्द देते हुए भेदों के अनुसार शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखने को कहें। • फिर भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना करना सिखाएँ तथा बताएँ कि भाववाचक संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से निर्मित किए जाते हैं।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. संज्ञा शब्द की परिभाषा देते हुए इसके तीनों भेदों के नाम बताइए।

....

....

ख. संज्ञा के तीनों भेदों की उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

ग. समुदायवाचक संज्ञा तथा द्रव्यवाचक संज्ञा को स्पष्ट करते हुए इनके तीन-तीन उदाहरण दीजिए।

....

....

....

घ. अपनी कक्षा के किन्हीं पाँच संज्ञा शब्दों को लिखिए।

....

....

....

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित करके खाली जगह भरिए–

क. सुरेश दफ़्तर में गलत काम करने के कारण अपनी .... से हाथ धो बैठा। (नौकर)

ख. .... शब्द को एक माँ से बेहतर और कोई भी परिभाषित नहीं कर सकता। (माता)

ग. .... में बल होता है। (एक)

घ. व्यक्ति के भीतर की .... भावना नहीं होनी चाहिए। (अहं)

ङ. आजकल सोनाक्षी अपनी .... पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देती। (पढ़ना)

च. हमें अपनी स्वतंत्रता इस प्रकार कायम रखनी चाहिए कि उससे दूसरे व्यक्तियों की .... का हनन न हो। (निज)

3. दिए गए शब्दों में से संज्ञा के सही भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. जागरण	–	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
ख. यौवन	–	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
ग. स्कूल	–	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
घ. झारखंड	–	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
ङ. जूही	–	व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक

4. निम्नलिखित शब्दों को उनकी जगह पर लिखिए–

हार	लड़कपन	सुंदरता	हाथी	लड़का	मित्र	माता	शत्रुता
बुढ़ापा	घोड़ा	बाग	टोपियाँ	मिठास	बंदर	मोर	बोतल
बचाव	उड़ान	हँसी	उतार				

जातिवाचक संज्ञा	**भाववाचक संज्ञा**
क.	क. ....
ख.	ख. ....
ग.	ग. ....
घ.	घ. ....
ङ.	ङ. ....
च.	च. ....
छ.	छ. ....
ज.	ज. ....
झ.	झ. ....
ण.	ण. ....

लिंग

पाठ योजना: 15

आज की अवधारणा

छात्रों को लिंग के बारे में बताना। उसके भेदों को परिभाषित करते हुए उनमें अंतर स्पष्ट करना। पुल्लिंग व स्त्रीलिंग की पहचान के नियम बताना व लिंग परिवर्तन के नियमों से अवगत करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्‌यार्थी पहले से जानते हैं कि शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में लिंग संबंधी नियमों के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- लिंग के बारे में सोचने और विचार करने में,
- बोले गए शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर पुल्लिंग व स्त्रीलिंग बताने में,
- लिंग परिवर्तन के नियम जानने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में 'लिंग' शब्द की कितनी उपयोगिता है।
- पुल्लिंग व स्त्रीलिंग की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- छात्रों को यह बताना की पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन के नियम क्या हैं।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'लिंग' शब्दों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अलग-अलग चित्र दिखाकर उसके लिंग के बारे में पूछें तथा बीच-बीच में छोटे-छोटे प्रश्न भी करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध लिंग संबंधी पुस्तकें।
- यूट्‌यूब पर लिंग परिवर्तन संबंधी वीडियों क्लिप्स।

- कक्षा में लिंग परिवर्तन संबंधी नियमों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'लिंग' से होगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को लिंग के संबंध में बताना व उसके भेद तथा लिंग परिवर्तन के नियमों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग व स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। • दोनो भेदों की परिभाषा उदाहरण सहित समझाने के बाद छात्रों से पुल्लिंग व स्त्रीलिंग वस्तुओं के बारे में पूछें। • उन्हें बताएँ कि हिंदी व्याकरण में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों का ज्ञान होना अति आवश्यक है, क्योंकि इससे ही वाक्य का भाव स्पष्ट होता है। • छात्रों को समझाएँ कि प्राणिवाचक संज्ञाओं में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग बताना आसान होता है। लेकिन कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो नित्य पुल्लिंग या नित्य स्त्रीलिंग होते हैं। वहीं प्राणहीन वस्तुओं को नर या मादा बताना भी कभी-कभी कठिन लगता है। • उसके बाद उन्हें पुल्लिंग व स्त्रीलिंग पहचान के बारे में बताएँ। • तत्पश्चात् छात्रों को लिंग की पहचान के बाद पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के नियमों से अवगत कराएँ। उन्हें समझाएँ कि पुल्लिंग शब्द को स्त्रीलिंग में बदलना लिंग बदलना कहलाता है। उनके नियमों से छात्रों को उदाहरण सहित परिचित कराएँ। • छात्रों को अवगत कराएँ कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो सदैव स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होते हैं। इन शब्दों में नर अथवा मादा लगाकर लिंग परिवर्तन किया जाता है। जैसे–नर तोता–मादा तोता आदि।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए–

क. रचयिता – ________ ख. नर खरगोश – ________

ग. नर मक्खी – ________ घ. नेता – ________

ङ. धैर्यवान – ________ च. श्रीमान – ________

छ. बुद्धिमान – ________ ज. भगवान – ________

2. निम्नलिखित शब्दों के पुल्लिंग रूप लिखिए–

क. मादा कछुआ – ________ ख प्रबंधकर्त्री – ________

ग. भर्त्री – ________ घ. निर्मात्री – ________

ङ. मादा मछली – ________ च. आचार्या – ________

छ. कुम्हारिन – ________ ज. भीलनी – ________

3. रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर रिक्त स्थान भरिए–

क. बालक और .... मिलकर अध्ययन कर रहे थे।

ख. सेठ और .... के पास रुपयों का ढेर लगा हुआ था।

ग. आज चाचा जी और .... से फोन पर बात हुई।

घ. शेर और .... की दहाड़ बहुत तेज़ थी।

ङ. दादा जी और .... रोज़ सुबह सैर करने जाते हैं।

च. पिता जी और .... रोज़ दफ़्तर जाते हैं।

4. सही उत्तर पर सही (✓) तथा गलत उत्तर पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

क. कुछ शब्दों में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग बताने के लिए आरंभ में 'नर' और 'मादा' शब्द का प्रयोग करते हैं।

ख. पन्ना, हीरा, मोती, मूँगा आदि रत्न स्त्रीलिंग हैं।

ग. वीरांगना तथा सास स्त्रीलिंग शब्द हैं।

घ. बिल्ली का पुल्लिंग शब्द बिलाव है।

ङ. वृक्षों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

च. पर्वतों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं।

वचन

पाठ योजनाः 16

आज की अवधारणा

छात्रों को वचन के बारे में बताना। उनके भेदों को परिभाषित करते हुए उनमें अंतर स्पष्ट करना। एकवचन के स्थान पर बहुवचन तथा बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग व वचन बदलने के नियमों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि हिंदी भाषा में वचन का अभिप्राय संख्या से है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में वचन संबंधी नियमों के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- वचन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- बोले गए शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर एकवचन व बहुवचन बताने में,
- वचन परिवर्तन के नियमों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना की भाषा में वचन शब्द की कितनी उपयोगिता है।
- एकवचन व बहुवचन की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- छात्रों को यह बताना कि वचन परिवर्तन के नियम क्या-क्या हैं।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वचन परिवर्तन संबंधी नियमों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर एक वर्ग-पहेली बनाएँ तथा छात्रों से उस वर्ग-पहेली में से शब्दों के बहुवचन रूप ढूँढकर लिखने के लिए कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वचन संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर वचन परिवर्तन संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में वचन बदलने के नियमों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नई जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'वचन' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को वचन के संबंध में बताना तथा उसके भेद तथा वचन परिवर्तन के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। • वचन के दो भेद हैं। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। वहीं संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राणी के एक से अधिक होने का बोध हो, उसे • बहुवचन कहते हैं। • छात्रों को बताएँ कि वचन का प्रभाव, क्रिया तथा विशेषण शब्दों को प्रभावित करता है। उन्हें अवगत कराएँ कि प्रायः संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण के रूप में परिवर्तन कर उनके बहुवचन रूप बनाए जाते हैं परंतु कुछ शब्द कारक चिह्न जुड़ने पर अपना रूप बदल लेते हैं। • ध्यान रखें कि समुदायवाचक संज्ञा शब्दों के लिए केवल एकवचन का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा सूर्य, चाँद, पानी, घी, आग, वर्षा, दही, चाय, झूठ, सत्य आदि शब्द एकवचन व आँसू, प्राण, हस्ताक्षर, बाल, दर्शन शब्द बहुवचन में प्रयुक्त किए जाते हैं। • उन्हें बताएँ कि आदर या सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है तथा अपना बड़प्पन दिखाने के लिए भी कुछ लोग 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करते हैं।

	• अध्यापक वचन परिवर्तन के सभी नियमों को श्यामपट्ट पर उतारकर उदाहरण सहित समझाएँ और उन्हें स्वयं कुछ शब्द देकर वचन परिवर्तन के लिए कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए–

क. .... फूलों पर बैठी हैं। (तितली / तितलियाँ)

ख. .... बॉल से खेल रहा है। (बच्चे / बच्चा)

ग. .... बगीचे में खेल रही हैं। (लड़कियाँ / लड़की)

घ. वृक्ष पर बहुत से .... बैठे थे। (तोता / तोते)

ङ. .... माँस खाता है। (कुत्ते / कुत्ता)

च. मिठाइयों पर .... मँडरा रही थीं। (मक्खियाँ / मक्खी)

2. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए–

क. किनारा – ______ ख. खटिया – ______

ग. दवात – ______ घ. धेनु – ______

ङ. शाखा – ______ च. वस्तु – ______

छ. विधि – ______ ज. नाव – ______

3. निम्नलिखित शब्दों के एकवचन रूप लिखिए–

क. बुढ़ियाँ – ______ ख. चार आदमी – ______

ग. वधुएँ – ______ घ. चालें – ______

ङ. लोटे – ______ च. अध्यापिकाएँ – ______

छ. रीतियाँ – ______ ज. सलाखें – ______

4. वचन बदलकर वाक्यों को दोबारा लिखिए–

क. अध्यापक पढ़ा रहा है।

....

ख. विद्यार्थी शोर कर रहा है।

....

ग. पुस्तकालय में पुस्तकें रखी हैं।

....

घ. पेड़ पर तोता बैठा है।

....

ङ. राजश्री के पास लाल रंग की टोपी है।

....

च. यहाँ सुंदर पौधे लगे हैं।

....

5. वचन संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध करके वाक्यों को पुनः लिखिए–

क. अर्जुन और भीम भाई था।

....

ख. नल में पानी आ गए।

....

ग. गांधी जी एक महान पुरुष था।

....

घ. उस कक्षा का विद्यार्थी शोर मचा रहे हैं।

....

ङ. पंजाब में पाँच नदी बहती है।

....

कारक

पाठ योजनाः 17

आज की अवधारणा

छात्रों को कारक और उसके भेदों तथा उनकी विभक्तियों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि संज्ञा के तीन विकारों में कारक भी शामिल है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- कारक के अर्थ को जानने में,
- कारक के भेदों तथा विभक्तियों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- कारक के अर्थ को जानने में,
- कारक के भेदों तथा विभक्तियों को समझने में।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को कारक के भेदों व उनकी विभक्तियों का उचित प्रयोग करने की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

श्यामपट्ट चित्रों के आधार पर वाक्य बनाते हुए उन वाक्यों में आए कारक भेद लिखिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर कारक व उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में कारक संबंधी पुस्तकें।
- कारक के भेदों व उनकी विभक्तियों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'कारक' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को कारक तथा उसके भेदों की जानकारी देते हुए उसकी महत्ता से परिचित कराना।	• छात्रों, संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं। • कारक के आठ भेद हैं तथा प्रत्येक भेद अपने विभक्ति चिह्न हैं। • उन्हें बताएँ कि वाक्य में शब्दों के मध्य के संबंध को यही विभक्ति चिह्न स्थापित करते हैं। • कारक चिह्नों को 'परसर्ग' के नाम से भी जाना जाता है। • कारक चिह्नों के महत्व तथा उपयोगिता से छात्रों को अवगत कराएँ। • अब एक-एक करके सभी भेदों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-**

   क. कारक को परिभाषित करते हुए इसके आठों भेदों के नाम लिखिए।

   ....

   ....

   ख. करण कारक तथा अपादान कारक के वाक्यों की पहचान आप कैसे करेंगे?

   ....

   ....

   ग. आपके हाथ से गेंद छूटकर नीचे गिर गई। यह वाक्य कौन-से कारक को दर्शा रहा है?

   ....

   ....

   घ. संप्रदान कारक तथा अधिकरण कारक का एक-एक उदाहरण लिखिए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में कारक संबंधी अशुद्धियों को ठीक करके वाक्यों को पुनः लिखिए–

क. देश में भगत सिंह ने जीवन कुर्बान किया।

....

ख. पेड़ का पत्ते गिर रहे हैं।

....

ग. यह मेरी बहन का फ्रॉक है।

....

घ. पतंग को डोर ले आओ।

....

ङ. शर्मिष्ठा मुखर्जी का पिता प्रणब मुखर्जी हैं।

....

च. माली ने पौधे से पानी डाला।

....

3. दिए गए वाक्यों को उचित कारक से मिलाइए–

क. दादी जी कुर्सी पर बैठी हैं।

ख. वह राधिका के भाई के साथ गया।

ग. बच्चे फुटबॉल से खेल रहे हैं।

घ. यमेश मीना से चतुर है।

ङ. मधु ने वीणा से धुन निकाली।

च. पेड़ से फल गिर रहे हैं।

छ. दीपिका रसोई में खाना बना रही है।

- करण कारक
- संबंध कारक
- अपादान कारक
- अधिकरण कारक

4. वाक्यों में आए कारक के सही भेद पहचान कर उस पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. पिताजी कलम से लिखते हैं।	करण कारक	☐	अपादान कारक	☐
ख. बच्चे सोफ़े पर बैठे हैं।	करण कारक	☐	अधिकरण कारक	☐
ग. श्रीकृष्ण ने बाँसुरी बजाई।	कर्ता कारक	☐	कर्म कारक	☐
घ. मोनिका की माता जी घूमने गई।	संबोधन कारक	☐	संबंध कारक	☐
ङ. माता जी ने बच्चों के लिए खाना बनाया।	कर्म कारक	☐	संप्रदान कारक	☐

सर्वनाम पाठ योजना: 18

आज की अवधारणा

छात्रों को सर्वनाम शब्द से परिचित कराते हुए उसके सभी भेदों का ज्ञान कराना तथा सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना से भी अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करने के महत्व को जानने में,
- संज्ञा के सभी भेदों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उचित स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करना।
- सर्वनाम के सभी भेदों को परिभाषित करते हुए उनके उदाहरण देना।
- सर्वनाम के भेदों में अंतर करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर सर्वनाम संबंधी कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इसके उचित भेद की पहचान करने हेतु प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कुछ उदाहरण दें तथा उनसे पूछें कि उक्त वाक्य में कौन-से शब्द सर्वनाम के किस भेद को बताते हैं।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में सर्वनाम व उसके भेदों की जानकारी देती पुस्तकें।
- यूट्यूब पर सर्वनामों की रूप-रचना से संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- सर्वनाम के भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'सर्वनाम' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को सर्वनाम के संबंध में बताना तथा भेदो को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करता।	• छात्रों, जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। • संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्दों के प्रयोग से भाषा सरल व स्पष्ट होती है। • उन्हें यह भी बताएँ कि ये शब्द स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं। केवल क्रिया से उनके स्त्री या पुरुष होने का पता चलता है जैसे–वह घूम रहा है या वह घूम रही है। • उन्हें स्पष्ट करें कि सर्वनाम के छह भेद हैं–पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधबोधक, प्रश्नवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम। • सभी भेदों को उदाहरण सहित परिभाषित करते हुए छात्रों को समझाएँ। • इस बात की भी जानकारी दें कि पुरुषवाचक सर्वनाम के भी तीन भेद हैं–उत्तम पुरुषवाचक, मध्यम पुरुषवाचक तथा अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम। तीनों भेदों को भी उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, उन्हें सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना करना बताएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. सर्वनाम को परिभाषित करते हुए इसके सभी भेदों के नाम लिखिए।

....

....

....

ख. अनिश्चयवाचक तथा निश्चयवाचक सर्वनामों में क्या अंतर है?

....

....

ग. सर्वनाम के जिस रूप से अन्य व्यक्ति का बोध हो, उसे कौन-सा सर्वनाम कहते हैं?

....

....

घ. संबंधवाचक सर्वनाम को परिभाषित कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को सर्वनाम के उचित भेदों से मिलाइए-

क.	तुम्हारा घर कहाँ है?	i)	संबंधवाचक सर्वनाम
ख.	मुझे उसकी शादी में जाना है।	ii)	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
ग.	वह अपने-आप विद्यालय जाता है।	iii)	अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
घ.	जैसा करोगे वैसा भरोगे।	iv)	निजवाचक सर्वनाम
ङ.	दरवाज़े पर कोई खड़ा है।	v)	प्रश्नवाचक सर्वनाम

3. निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

क. स्वयं - ....

ख. जहाँ-वहाँ - ....

ग. कहाँ - ....

घ. मेरे - ....

ङ. तुम - ....

4. कोष्ठक में दिए गए उचित सर्वनाम शब्दों से रिक्त स्थान भरिए-

क. नेता .... होता है जो जनता की सेवा करे। (यह / वो)

ख. मैं अपना काम .... कर लूँगी। (स्वयं / अपने)

ग. जैसा करोगे .... ही फल मिलेगा। (वो / वैसा)

घ. .... मेहमानों का स्वागत करना चाहिए। (तुम्हारे / हमें)

ङ. .... मेरा मित्र है। (उसने / वह)

च. .... आपकी प्रतीक्षा रहेगी। (मुझे / मैं)

विशेषण

पाठ योजनाः 19

आज की अवधारणा

छात्रों को विशेषण व विशेष्य के बारे में बताना। उनकी परिभाषा से परिचित कराते हुए उनके भेदों को उदाहरण सहित समझाना व अंतर स्पष्ट करना। विशेषणों की अवस्थाएँ तथा विशेषणों की रचना का बोध कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का पता चलता है, उन्हें विशेषण कहते हैं तथा जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में विशेषण संबंधी अवस्थाएँ व उनकी रचना को जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- विशेषण के बारे में सोचने और विचार करने में,
- बोले गए शब्दों को ध्यान से सुनकर उसमें विशेषण व विशेष्य पहचानने में,
- विशेषण के चारों भेदों के बीच अंतर पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में विशेषण शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- विशेषण के भेदों की अलग-अलग उपयोगिताओं को बताना।
- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक व सार्वनामिक विशेषणों की पहचान के बारे में बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को विशेषणों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई अनुच्छेद दें या लिखवाएँ। फिर उसमें से विशेषण के भेदों से संबंधित शब्दों को छाँटकर अलग-अलग करके लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विशेषण संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विशेषण के भेदों संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विशेषण व भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उसकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'विशेषण' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को विशेषण के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि विशेषण के चार भेद होते हैं। जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, भाव, अवस्था, दशा आदि का बोध कराते हैं, ऐसे शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। वहीं जो विशेषण शब्द विशेष्य की संख्या संबंधी विशेषता बताएँ, उसे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। • अब जो विशेषण शब्द विशेष्य की माप, तोल तथा परिमाण संबंधी किसी भी विशेषता का बोध कराएँ, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। इसके अलावा जो सर्वनाम शब्द विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। • छात्रों को अधिक से उदाहरणों द्वारा सभी भेद स्पष्ट करके चारों भेदों से संबंधित दो-दो वाक्य अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखने को कहें और बताएँ कि संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक के दो-दो अन्य भेद भी होते हैं—निश्चित संख्यावाचक और अनिश्चित संख्यावाचक तथा निश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

	• उसके बाद छात्रों को विशेषण की अवस्थाओं के बारे में बताएँ। विशेषण की अवस्थाएँ या स्थितियाँ होती हैं–अच्छा, उससे अच्छा, सबसे अच्छा। पहली स्थिति में केवल गुण–दोष का वर्णन होता है। दूसरी स्थिति में किसी से तुलना की जाती है तथा तीसरी स्थिति में उस तरह से सभी (व्यक्ति/वस्तु) से निम्न या उच्च बताया जाता है। • ध्यान रखें कि विशेषण की अवस्थाओं में उत्तरावस्था को व्यक्त करने के लिए विशेषण शब्द के अंत में 'तर' जोड़ते हैं और उत्तमावस्था को व्यक्त करने के लिए विशेषण के अंत में 'तम' जोड़ते हैं। • हिंदी में तुलनात्मक विशेषता को प्रकट करने के लिए 'से अधिक', 'से कम' जैसे प्रविशेषणों का प्रयोग होता है। • छात्रों को उसके बाद विशेषणों की रचना के बारे में बताएँ कि कुछ विशेषण मूल रूप से किसी न किसी की विशेषता प्रकट करते हैं। • अंत में उन्हें बताएँ कि अधिकतर विशेषण, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय की सहायता से बनाए जाते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. विशेषण तथा विशेष्य में भेद कीजिए।

....

....

ख. संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर बताइए।

....

....

....

ग. सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में क्या अंतर है? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

....

घ. विशेषण की तीन अवस्थाओं को स्पष्ट कीजिए।

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को विशेषण की उचित अवस्था से मिलाइए–

क.	रीजू के बाल मम्मी से लंबे हैं।	(मूलावस्था)
ख.	दीपिका पादुकोन सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री है।	(उत्तरावस्था)
ग.	आम रसीला फल है।	(उत्तमावस्था)
घ.	ऋचा का भाई एक ईमानदार व्यक्ति है।	
ङ.	प्रार्थना कक्षा में सबसे बुद्धिमान है।	
च.	आराध्या ऋद्धिमा से छोटी है।	

3. निम्नलिखित शब्दों से बने उचित विशेषण शब्द में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	ठंड	–	ठंडाई	☐	ठंडी	☐	ठंडा	☐
ख.	क्रोध	–	क्रोधी	☐	क्रोधवान	☐	क्रोधिनी	☐
ग.	मंगल	–	ग्रह	☐	मांगल	☐	मांगलिक	☐
घ.	तैरना	–	तैराक	☐	तैरा	☐	तैरता	☐
ङ.	नीचे	–	निम्न	☐	निचली	☐	निचलाना	☐
च.	इतिहास	–	ऐतिहासिक	☐	ऐतिहास	☐	इतिहासिक	☐
छ.	ग्राम	–	ग्राम्या	☐	ग्रामीण	☐	गाँव	☐

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप से खाली स्थान को भरिए–

क. व्यक्ति .... मोह–माया में ही उलझा रहता है। (संसार)

ख. आजादपुर में एक .... कसी की सोने की चेन लूट कर भाग गया।(लुटना)

ग. कपिल का भाई बहुत .... है। (लड़ना)

घ. माइकल फेल्प्स एक कुशल .... है। (तैरना)

ङ. मेरे पिताजी एक .... इंसान हैं। (दया)

च. हम सब .... नागरिक हैं। (भारत)

5. उचित विकल्प में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. दो रसगुल्ले – परिमाणवाचक विशेषण संख्यावाचक विशेषण

ख.	थोड़ी शक्कर	–	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ग.	कुछ व्यक्ति	–	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
घ.	चार केले	–	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ङ.	दो किलो आटा	–	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
च.	बीस गज ज़मीन	–	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण

6. निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

क. सार्वनामिक विशेषण संज्ञा की विशेषता बताते हैं। ☐

ख. विशेषण के सात भेद होते हैं। ☐

ग. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं। ☐

घ. सार्वनामिक विशेषण संज्ञा की विशेषता बताते हैं। ☐

ङ. परिमाणवाचक विशेषण मात्रा का बोध कराते हैं। ☐

च. संख्यावाचक विशेषण से संज्ञा और सर्वनाम के नाप-तौल का पता चलता है। ☐

क्रिया

पाठ योजनाः 20

आज की अवधारणा

छात्रों को क्रिया शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए कर्म के आधार पर अकर्मक तथा सकर्मक भेदों को स्पष्ट करना। साथ ही उन्हें प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेदों की जानकारी देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं हो सकता।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- क्रिया तथा धातु का अर्थ समझने में,
- कर्म के आधार पर क्रिया के भेदों को जानने में,
- प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेदों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को क्रिया के महत्व से अवगत कराना।
- कर्म के आधार पर क्रिया के भेदों से भली-भाँति परिचित कराना।
- प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेदों से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में क्रिया तथा कर्म एवं प्रयोग के आधार पर क्रिया-भेदों को समझने का भाव विकसित करना।

गतिविधियाँ

एक चार्ट पेपर पर अपनी पसंद का कोई दृश्य बनाइए तथा उस चित्र का वर्णन करके क्रिया वाले शब्दों को रेखांकित कीजिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध व्याकरण संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर कर्म के आधार पर क्रिया के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'क्रिया' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को क्रिया के संबंध में जानकारी देते हुए कर्म तथा प्रयोग के आधार पर भेदों को स्पष्ट करना।	• छात्रों, जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं। • क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। • उन्हें बताएँ कि कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं—अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया। दोनों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • अकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ 'क्या' या 'किसको' लगाकर प्रश्न करें। यदि कोई उत्तर न मिलें, तो क्रिया अकर्मक हैं। • सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करना चाहिए। यदि उत्तर मिलता है, तो क्रिया सकर्मक है। • उन्हें स्पष्ट करें कि प्रयोग के आधार पर क्रिया पाँच प्रकार की होती हैं—सामान्य, संयुक्त, नामधातु, प्रेरणार्थक तथा पूर्वकालिक क्रिया। • इन सभी क्रियाओं को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

क. धातु किसे कहते हैं?

....

ख. अकर्मक क्रिया की पहचान कैसे की जाती है? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ग.	प्रयोग के आधार पर संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया तथा प्रेरणार्थक क्रियाओं को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

घ.	सकर्मक क्रिया की पहचान आप कैसे करेंगे?

....

....

....

ङ.	आज आपने सुबह उठने से लेकर विद्यालय से वापिस आने के समय तक जितनी भी क्रियाएँ की हैं, उनमें से किन्हीं छह क्रियाओं को लिखिए?

....

....

....

....

....

....

2. दिए गए वाक्यों में कर्ता पर (गोला) और कर्म को रेखांकित कीजिए–

क.	स्नेहा ने गिटार बजाना सीखा।

ख.	सभी छात्र पुस्तक पढ़ रहे हैं।

ग.	पिताजी ने फल खाए।

घ.	राम ने रावण को मारा।

ङ.	नेहा गाना गा रही है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को पहचान कर उसके भेद से मिलाइए–

क.	मीनाक्षी रो रही है।

ख.	वह खाना खाकर सो गई।		अकर्मक क्रिया

ग.	माताजी केले लेकर आई।		सकर्मक क्रिया

घ.	राम उदास है।

ङ.	सीता ने गाना सुनाया।

च.	मैं प्रश्न पूछ चुकी हूँ।

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

क. सकर्मक क्रिया कर्म रहित होती है। ☐

ख. क्रिया किसी कार्य के करने या होने की जानकारी देती है। ☐

ग. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया के बाद होती है। ☐

घ. वाक्य में किसी एक क्रिया का प्रयोग होना, सामान्य क्रिया कहलाती है। ☐

5. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ।

क. कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद कौन-से हैं?

(अ) संक्रमक व अक्रमक (ब) सकर्मक व अकर्मक

(स) संक्रामक व अक्रामक

ख. प्रयोग के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं?

(अ) चार (ब) पाँच (स) छह

ग. 'अध्यापक बच्चे से पाठ पढ़वाता है' वाक्य में रेखांकित शब्द में क्रिया का कौन-सा प्रकार है?

(अ) सामान्य क्रिया (ब) नामधातु क्रिया (स) प्रेरणार्थक क्रिया

घ. 'राम ने सेब खाए' वाक्य में कौन-सी क्रिया है?

(अ) सकर्मक (ब) अकर्मक (स) कोई नहीं

ङ. अकर्मक क्रिया कैसी होती है?

(अ) कर्म सहित (ब) कर्म रहित (स) कोई नहीं

काल

पाठ योजना: 21

आज की अवधारणा

छात्रों को काल के बारे में बताना। उसके अर्थ व परिभाषा को बताते हुए भेदों के नामों से परिचित कराना। भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत काल में अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि काल शब्द से हमें समय का बोध होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में काल संबंधी जानकारी के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- काल के बारे में सोचने और विचार करने में,
- बोले गए शब्दों या वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर उसका काल पहचानने में,
- काल के तीनों भेदों के बीच अंतर जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को दैनिक भाषा में काल शब्द की उपयोगिता बताना।
- भूतकाल, वर्तनाम काल व भविष्यत काल की अलग-अलग उपयोगिताएँ समझाना।
- छात्रों को यह बताना की काल के तीनों भेदों के भी अपने भेद हैं। उनसे उन्हें परिचित कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को काल के भेदों को जानने संबंधी कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर छात्रों को उन शब्दों से अपनी कार्य-पुस्तिका में सभी भेदों से संबंधित वाक्य बनाकर लाने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में काल संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर काल के भेदों की जानकारी संबंधी वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में काल व भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अन्य जानकारी' से होगी जिसमें उन्हें विविध जानकारियाँ दी जाएँगी; जैसे–हिंदी महीनों के नाम, जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ, अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी नाम तथा समूहवाची शब्दों की जानकारी।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को काल के संबंध में बताना व भेदों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं–वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल। • वर्तमान काल से हमें चल रहे समय में कार्य के होने का बोध हाता है। भूतकाल से हमें बीते समय में कार्य के होने का बोध होता है तथा भविष्यत काल से हमें कार्य के भविष्य में होने का बोध होता है। • सर्वप्रथम वर्तमान काल की परिभाषा श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों को उसके तीनों भेदों (सामान्य वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल) के बारे में उदाहरण सहित बताएँ। • उसके बाद उन्हें भूतकाल के बारे में बताएँ। उन्हें अवगत कराएँ कि भूतकाल के छह भेद होते हैं सामान्य भूत, अपूर्ण भूत, पूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, हेतु-हेतुमद् भूत। • भूतकाल के सभी भेदों को समझाने के बाद श्यामपट्ट पर उसके सभी भेदों से संबंधित कुछ वाक्य लिखकर छात्रों को उन्हें पढ़कर भेद पहचानने को कहें। • अंत में छात्रों को भविष्यत काल के बारे में स्पष्ट करें तथा उसके दोनों भेदों सामान्य भविष्यत काल व संभाव्य भविष्यत काल की परिभाषा श्यामपट्ट पर लिखकर उदाहरण सहित स्पष्ट रूप से समझाएँ। • तीनों भेदों को विस्तारपूर्वक समझाकर छात्रों को काल के तीनों भेदों की परिभाषा लिखकर उसके भेदों को उदाहरण सहित लिखकर लाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. काल हमें किस चीज़ की सूचना देता है?

....

ख. वर्तमान काल के तीनों भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

ग. भविष्यत् काल को परिभाषित करते हुए इसके दोनों भेदों में अंतर बताइए।

....

....

....

....

....

घ. संदिग्ध भूतकाल किसे कहते हैं? संदिग्ध भूतकाल के दो उदाहरण दीजिए।

....

....

....

ङ. पूर्ण भूतकाल तथा अपूर्ण भूतकाल में क्या अंतर है?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर काल के सही भेद में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	वह खाकर आई है।	सामान्य काल	आसन्न भूतकाल
ख.	राधिका सोती होगी।	अपूर्ण वर्तमान	संदिग्ध वर्तमान
ग.	शायद आज बारिश होगी।	सामान्य भविष्यत्	संभाव्य भविष्यत्
घ.	शाहजहाँ ने लाल किला बनवाया था।	अपूर्ण भूतकाल	पूर्ण भूतकाल

3. **निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए–**

क. भूतकाल बीते हुए समय का बोध कराता है। ☐

ख. काल का शाब्दिक अर्थ समय है। ☐

ग. आसन्न भूतकाल क्रिया के तुरंत समाप्त होने का बोध कराता है। ☐

घ. वर्तमान काल बीते समय में किए गए कार्य का बोध कराता है। ☐

ङ. काल क्रिया की विशेषता बताते हैं। ☐

च. भविष्यत् काल आने वाले समय का बोध कराता है। ☐

4. **कोष्ठकों में दिए गए निर्देशानुसार रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–**

क. माता जी ने टी.वी. ....। (देखना – आसन्न भूतकाल)

ख. गाय घास ....। (चरना – सामान्य वर्तमान काल)

ग. रीता डांस ....। (करना – अपूर्ण भूतकाल)

घ. शायद आज धूप ....। (निकलना – संभाव्य भविष्यत्)

ङ. ममता ....। (पढ़ – अपूर्ण वर्तमान)

5. **निम्नलिखित वाक्यों को उचित काल से मिलाइए–**

क. बच्चे खेल रहे हैं। •	• संदिग्ध भूतकाल
ख. पिताजी कल आएँगे। •	• पूर्ण भूतकाल
ग. चाची जी बाजार गई होंगी। •	• सामान्य भविष्यत् काल
घ. सोहन पढ़ता तो फेल नहीं होता। •	• हेतु–हेतुमद् भूतकाल
ङ. अरविंद केजरीवाल ने आप पार्टी का गठन किया। •	• सामान्य वर्तमान काल
च. आज बारिश आ सकती है। •	• संभाव्य भविष्यत् काल

6. **निर्देशानुसार क्रियाओं का काल परिवर्तन करके वाक्यों को पुनः लिखिए–**

क. तुम क्या देख रहे हो? (भूतकाल)

....

ख. मोनार्क ने घर खरीदा। (वर्तमान काल)

....

ग. जल्दी ही हम अमेरिका पहुँच जाएँगे। (भविष्यत् काल)

....

घ. महिमा क्रांति एक्सप्रेस से आई। (भविष्यत् काल)

....

ङ. दुकानदार सामान दे रहा है। (भूतकाल)

....

अविकारी शब्द (अव्यय) पाठ योजनाः 22

आज की अवधारणा

छात्रों को अविकारी शब्द का अर्थ बताते हुए इसके भेदों–क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात आदि के संबंध में जानकारी देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी लिंग, वचन, क्रिया, कारक और काल से पहले से ही परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अविकारी शब्द का अर्थ समझने में,
- क्रियाविशेषण तथा इसके भेदों को जानने में,
- संबंधबोधक को जानने में,
- समुच्चयबोधक तथा इसके भेदों को समझने में,
- विस्मयादिबोधक भावों के सूचक शब्दों तथा निपात को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों में क्रिया तथा क्रियाविशेषण के मध्य अंतर करने की समझ विकसित करना।
- भाषा प्रयोग के दौरान अविकारी शब्दों की उपयोगिता से अवगत कराना।
- अविकारी शब्दों के मध्य अंतर करने की योग्यता का विकास करना।
- दिए गए उदाहरणों में से अविकारी शब्दों को छाँटकर अलग करने की समझ उत्पन्न करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अविकारी शब्दों के भेदों को समझकर उचित स्थान पर इन्हें प्रयुक्त करने की समझ विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई दृश्य दें तथा उसे देखकर अनुच्छेद लिखने को कहें। अब अनुच्छेद में से समुच्चयबोधक तथा संबंधबोधक शब्दों को रेखांकित करने को कहें।

- दिए गए चित्रों को देखकर बताइए कि इनमें कौन-से भाव प्रकट हो रहे हैं।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध व्याकरण संबंधी पुस्तकें जिनसे अविकारी शब्दों से संबंधित जानकारी प्राप्त हो।
- यूट्यूब पर अविकारी शब्द तथा इसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विस्मयादिभाव तथा इनके सूचक शब्दों को प्रदर्शित करता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अविकारी शब्द (अव्यय)' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को काल के संबंध में बताना व भेदों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक या काल के कारण कोई परिवर्तन न आए, उन्हें अविकारी शब्द (अव्यय) कहते हैं। • अविकारी शब्द के पाँच भेद हैं–क्रियाविशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात। • अध्यापक एक-एक भेद को लेते हुए इसे स्पष्ट करें। • जो अविकारी शब्द क्रिया की किसी विशेषता को प्रकट करे, उसे 'क्रिया विशेषण' कहते हैं। क्रियाविशेषण के चार भेद हैं। उदाहरण सहित सभी भेदों को परिभाषित करते हुए स्पष्ट करें। • संबंधबोधक वे शब्द हैं, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं। उन्हें उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें।

	• अविकारी शब्द का तीसरा भेद समुच्चयबोधक (योजक) है। ये अविकारी शब्द हैं जो दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ते हैं। • छात्रों को बताएँ कि समुच्चयबोधक के तीन भेद हैं–संयोजक, विभाजक तथा विकल्पसूचक तीनों भेदों को स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, विस्मयादिबोधक शब्द के बारे में बताएँ कि वे अविकारी शब्द जो आश्चर्य, घृणा, शोक, हर्ष आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक शब्द' कहते हैं। • विभिन्न भावों को प्रदर्शित करने वाले सूचक शब्दों से उन्हें परिचित कराना। • अंततः उन्हें निपात से अवगत कराते हुए बताएँ कि वे अविकारी पद जो वाक्य में किसी शब्द के बाद बात को बल प्रदान करने के लिए लगाए जाते हैं, 'निपात' कहलाते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. क्रियाविशेषण किसकी विशेषता बताता है?

....

ख. अविकारी शब्द के भेद 'निपात' को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. समुच्चयबोधक के तीनों भेदों को बताइए।

....

....

....

घ. क्रियाविशेषण के स्थानवाचक तथा कालवाचक भेद को बताइए।

....

....

2. **कोष्ठक में दिए गए उचित समुच्चयबोधक शब्दों को छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

क. सिया सबकी प्यारी है .... वह सभी का मान-सम्मान करती है। (लेकिन / क्योंकि)

ख. राम .... सीता पति-पत्नी थे। (या / और)

ग. मैंने बहुत मेहनत की .... सफल न हो सका। (लेकिन / क्योंकि)

घ. तुम बहुत शांत स्वभाव की हो .... तुम्हारी बहन बहुत जिद्दी है। (लेकिन / या)

च. गाँव में स्कूल बना .... बच्चों को दूरदराज के विद्यालयों में न जाना पड़े। (अन्यथा / ताकि)

छ. मीना की माता जी बीमार हैं .... वे दफ़्तर नहीं गईं (इसलिए / ताकि)

3. **निम्नलिखित समुच्चयबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

क. मानो – ....

ख. परंतु – ....

ग. किंतु – ....

घ. इसलिए – ....

ङ. एवं – ....

च. लेकिन – ....

4. **रेखांकित क्रियाविशेषण शब्दों के उचित भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

क. मेरी सहेली <u>नीचे</u> खड़ी है।	स्थानवाचक	कालवाचक	रीतिवाचक
ख. मोनिका <u>ध्यानपूर्वक</u> सुन रही थी।	कालवाचक	स्थानवाचक	रीतिवाचक
ग. हमें रात में <u>थोड़ा</u> खाना चाहिए।	रीतिवाचक	परिमाणवाचक	कालवाचक
घ. वह स्कूल में <u>अभी</u> आई है।	परिमाणवाचक	रीतिवाचक	कालवाचक
ङ. मैं <u>धीरे-धीरे</u> लिखकर याद करती हूँ।	स्थानवाचक	रीतिवाचक	कालवाचक

5. **वाक्यों में प्रयुक्त संबंधबोधक शब्द छाँटकर अलग लिखिए-**

क. वायु के बिना साँस लेना असंभव है। ....

ख. बगीचे के अंदर कई क्यारियाँ बनी हैं। ....

ग. पेड़ के नीचे व्यक्ति सोया है। ....

घ. सड़क के किनारे रामू का घर है। ....

ङ. तालाब के बीच कमल खिले हैं। ....

6. **निम्नलिखित विस्मयादिबोधक भावों के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उनके तीन-तीन उदाहरण दीजिए-**

उदाहरण: विस्मयसूचक – ओहो, सच, अच्छा!

क. घृणासूचक – ....

ख. क्रोधसूचक – ....

ग. भयसूचक – ....

घ. हर्षसूचक – ....

ङ. स्वीकृतिसूचक – ....

7. **वाक्यों में आए विस्मयादिबोधक सही हैं, तो सही (✓) तथा गलत हैं, तो गलत (✗) का चिह्न लगाएँ-**

क. बच्चों! कितना स्वादिष्ट खाना बना है। ☐

ख. उफ़! रक्षा कीजिए। ☐

ग. शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया। ☐

घ. उफ़! कितनी गर्मी है। ☐

ङ. हे प्रभु! यह क्या कर रहे हो? ☐

वाक्य-विचार

पाठ योजनाः 23

आज की अवधारणा

छात्रों को वाक्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके अंगों (उद्देश्य व विधेय) तथा उनके विस्तार की जानकारी देना। उन्हें विभिन्न आधारों पर किए वाक्य-भेदों से परिचित कराना। साथ ही वाक्य-परिवर्तन तथा अशुद्ध वाक्यों को किस प्रकार शुद्ध किया जाए इसका भी ज्ञान कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि भाषा का प्रयोग वाक्यों को संयुक्त रूप से करने पर ही संभव है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- वाक्य के अंगों तथा उनके विस्तार को जानने में,
- भाषा में वाक्यों की क्या महत्ता है, इस बात को समझने में,
- अर्थ तथा रचना के आधार पर वाक्य-भेदों को जानने में,
- वाक्य अशुद्धि से किस प्रकार बचा जाए, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अर्थ के आधार पर वाक्यों में अंतर तथा उनके उदाहरणों की पहचान करना।
- रचना के आधार पर वाक्यों की पहचान करना।
- इसी आधार पर वाक्य-परिवर्तन करना।
- भाषा प्रयोग के दौरान स्वयं को विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से बचाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वाक्य-विचार के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य की पहचान तथा उन्हें परिवर्तित करने की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक कुछ परचियाँ तैयार करें जिनमें अर्थ एवं रचना के आधार पर भेदों के नाम लिखे हों। अब एक-एक छात्र को बुलाते हुए उनके द्वारा उठाई गई परची में आए भेद पर कोई वाक्य बनाने को कहें। इस प्रकार खेल-खेल में उनके आत्मविश्वास को बल प्रदान करते हुए उन्हें समझाएँ कि जैसा भी समझ आए अपना वाक्य बिना किसी संकोच के प्रस्तुत करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वाक्य-विचार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वाक्य-परिवर्तन संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप की जानकारी देता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत एक नए अध्याय 'वाक्य-विचार' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को वाक्य के अंग समझाते हुए इसके भेदों से परिचित कराना तथा वाक्य-परिवर्तन के लिए प्रेरित करना।	• छात्रों, जिन शब्दों अथवा शब्दों के समूह का कोई सार्थक अर्थ बनता है, उसे 'वाक्य' कहते हैं। • वाक्य के दो अंग हैं–उद्देश्य तथा विधेय। वाक्य के अंतर्गत जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, वह 'उद्देश्य' कहलाता है। वहीं वाक्य के अंतर्गत उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं। उदाहरण देकर इन्हें स्पष्ट करें। • उन्हें उद्देश्य के विस्तार तथा विधेय के विस्तार को भी उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • तत्पश्चात् यह बताएँ कि वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं– अर्थ तथा रचना के आधार पर। • अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार हैं। सभी प्रकारों को अध्यापक उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • अर्थ के आधार पर पढ़ाने के बाद उन्हें बताएँ कि रचना के आधार पर वाक्य को सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों में बाँटा गया है। अब इन्हें स्पष्ट करें। • उसके बाद उन्हें बताएँ कि सरल से किस प्रकार मिश्रित एवं संयुक्त तथा संयुक्त से मिश्रित वाक्य परिवर्तित किए जा सकते हैं।

	• छात्रों को बताएँ कि लिखते या बोलते समय विद्‌यार्थी लिंग, वचन, कारक, क्रिया, काल आदि से संबंधित नियमों का ध्यान नहीं रखते, जिससे वाक्य अशुद्‌ध हो जाते हैं। पाठ से ऐसी ही अशुद्‌धियों को दूर करने के बारे में बताएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्‌देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. उद्‌देश्य तथा विधेय से आप क्या समझते हैं?

....

....

ख. उद्‌देश्य का विस्तार किसे कहते हैं?

....

....

ग. संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य में अंतर बताइए।

....

....

....

....

घ. संयुक्त वाक्य में दो सरल वाक्यों को किसके द्‌वारा जोड़ा जाता है?

....

....

ङ. संदेहवाचक से क्या तात्पर्य है?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को रचना के आधार पर निर्देशानुसार बदलकर लिखिए–

क. अध्यापिका आईं और बच्चे पढ़ने लगे। (सरल वाक्य)

....

ख. जब अनुष्का आई तब सविता चली गई। (संयुक्त वाक्य)

....

ग. उसने मेहनत की और सफलता प्राप्त कर ली। (मिश्रित वाक्य)

....

घ. दीपावली पर हम खूब मिठाई खाएँगे। (मिश्रित वाक्य)

....

ङ. गरमी की छुट्टियों में हम आगरा चले गए। (संयुक्त वाक्य)

....

3. दिए गए वाक्यों को अर्थ के आधार पर निर्देशानुसार बदलकर लिखिए–

क. वह शरारत करता है। (निषेधवाचक)

....

ख. आज बहुत तेज़ बारिश हो जाए। (इच्छावाचक)

....

ग. माता जी दिल्ली लौट आई। (प्रश्नवाचक)

....

घ. क्या वह बुद्धिमान है? (विधानवाचक)

....

ङ. कितना मनोरम दृश्य है। (विस्मयादिबोधक)

....

4. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाकर अर्थ के आधार पर वाक्य का भेद बताइए–

क.	शायद वह भी आएगी।	प्रश्नवाचक	संदेहवाचक	विस्मयादिबोधक
ख.	ईश्वर करें, तुम स्वस्थ हो जाओ।	आज्ञावाचक	इच्छावाचक	निषेधवाचक
ग.	क्या आपने खाना खाया?	प्रश्नवाचक	विधानवाचक	संदेहवाचक
घ.	वाह!क्या खाना है।	इच्छावाचक	विस्मयादिबोधक	आज्ञावाचक
ङ.	बच्चे टी.वी. देख रहे हैं।	आज्ञावाचक	प्रश्नवाचक	विधानवाचक

विराम-चिह्न पाठ योजनाः 24

आज की अवधारणा

छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताना। महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों को परिभाषित करते हुए उनसे परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि अपनी बात को कहते समय बीच-बीच में रुकना 'विराम' कहलाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में विराम-चिह्नों के प्रयोगों को जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- विराम-चिह्नों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनमें लगने वाले विराम-चिह्नों को पहचानने में,
- विराम-चिह्न क्यों आवश्यक होते हैं, यह जानने में।।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना की भाषा में विराम-चिह्न की कितनी उपयोगिता है।
- प्रत्येक विराम-चिह्न की अलग-अलग उपयोगिता व महत्ता समझाना।
- विराम-चिह्न के प्रयोगों की जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विराम-चिह्नों के प्रयोगों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

आपसी संवाद द्वारा विराम को स्पष्ट करना तथा चित्र द्वारा विराम-चिह्नों की पहचान कराना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विराम-चिह्न संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विराम-चिह्न प्रयोग संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विराम-चिह्नों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'विराम-चिह्न' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताना तथा उनके प्रयोग के अर्थ जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, विराम का अर्थ 'रुकना' होता है। लिखते समय इस रुकने या ठहराव को दर्शाने के लिए जिन चिह्नों को प्रयोग किया जाता है, इसे 'विराम-चिह्न' कहते हैं। • अध्यापक सभी विराम-चिह्नों को उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ। • छात्रों को बताएँ कि कभी-कभी किसी विराम-चिह्न के छूट जाने से अथवा गलत प्रयोग कर देने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है जैसे–रुको मत, जाओ। रुको, मत जाओ। आदि। • उन्हें अवगत कराएँ कि इन दोनों वाक्यों के शब्दों में कोई अंतर नहीं है। उनका क्रम भी एक जैसा ही है परंतु विराम-चिह्नों के परिवर्तन से अर्थ में भिन्नता आ रही है। • विराम-चिह्न किसी भाषा का अनिवार्य अंग हैं। अपने विचारों को सही ढंग से प्रस्तुतीकरण करने के लिए विराम-चिह्न लगाने अति आवश्यक हैं। • छात्रों को बताएँ कि विराम-चिह्नों के प्रयोग से अर्थ में सुंदरता व भाषा में स्पष्टता आती है। • श्यामपट्ट पर बिना विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए अध्यापक एक अनुच्छेद लिखें तथा छात्रों को उस अनुच्छेद को अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर उसमें उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. विराम-चिह्नों की आवश्यकता क्यों होती है?

....

....

....

ख. अल्प विराम और अद्‌र्ध विराम में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. इकहरे उद्‌धरण चिह्‌न (‘ ’) का प्रयोग कब किया जाता है? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

2. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	संक्षेप में लिखने पर	(?)	☐	(०)	☐
ख.	वाक्य में कुछ लिखना भूलने पर	(‸)	☐	(“ ”)	☐
ग.	विवरण देने पर	(-)	☐	(:-)	☐
घ.	प्रश्न पूछने पर	(;)	☐	(?)	☐
ङ.	वाक्य के पूरा होने पर	(।)	☐	(!)	☐

3. निम्नांकित चिह्नों के समक्ष उनके नाम तथा एक-एक उदाहरण लिखिए–

चिह्न	**नाम**	**उदाहरण**
क. –	....	....
ख. !	....	....
ग. ०	....	....
घ. ;	....	....
ङ. { }	....	....

4. निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्यों को दोबारा लिखिए–

क. यह मैच डी ए वी के बारहवीं कक्षा के छात्रों ने जीता

....

ख. वेदों की संख्या चार है ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

....

ग. महादेवी वर्मा जैसी कविता कोई नहीं लिख पाता

....

घ. महात्मा गांधी बापू के नाम से जाने जाते हैं

....

ङ. ओ भैया ज़रा इधर आना

....

मुहावरे और लोकोक्तियाँ पाठ योजनाः 25

आज की अवधारणा

छात्रों को मुहावरे व लोकोक्तियों के बारे में बताना। उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए परिभाषित करना। उनके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में मुहावरे व लोकोक्ति प्रयोग संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- मुहावरे व लोकोक्ति के बारे में सोचने और विचार करने में,
- मुहावरे व लोकोक्ति को सुनकर उसका अर्थ पहचानने व बताने में,
- मुहावरे व लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग समझाने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में मुहावरे व लोकोक्तियों की उपयोगिता समझाना।
- मुहावरे व लोकोक्तियों का अलग-अलग महत्व बताना।
- उनके अर्थ जानने व वाक्य प्रयोग करने के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करना तथा उनकी जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में मुहावरे व लोकोक्तियों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक अलग-अलग चित्र दिखाकर छात्रों से उनसे संबंधित मुहावरे व लोकोक्तियाँ बताने के लिए कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध मुहावरे व लोकोक्ति संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर मुहावरे व लोकोक्ति के अर्थ व वाक्य प्रयोग की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में शरीर के अंगों व गिनतियों से बने मुहावरे लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'मुहावरे व लोकोक्तियों' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को मुहावरों के बारे में बताना तथा लोकोक्तियों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है। वहीं जान लीजिए कि लोक में प्रचलित कहावतें लोकोक्ति कहलाती हैं। • 'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ अभ्यास अथवा बातचीत है। वहीं लोकोक्ति दो शब्दों का मेल है—लोक्+उक्ति। लोक अर्थात् जगत तथा उक्ति का अर्थ है—कथन। यानि लोक में प्रचलित कहावतें। • उन्हें बताएँ कि मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में बल तथा भाव में ओजस्विता एवं स्पष्टीकरण आ जाता है। • छात्र जान लें कि वाक्यांश होने के कारण मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता लेकिन लोकोक्ति का हो सकता है। • मुहावरों व लोकोक्ति जीवन में अनुभवों तथा घटनाओं पर आधारित होती है। • श्यामपट्ट पर अध्यापक कुछ मुहावरे व लोकोक्तियाँ लिखें तथा छात्रों को उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में वाक्य प्रयोग करने को कहें।

	• छात्रों को बताएँ कि लोकोक्तियों के पीछे अनुभव का सत्य छिपा होता है, जबकि मुहावरे के पीछे ऐसी अनुभव की सत्यता नहीं होती है। वह तो अपना साधारण अर्थ छोड़कर रूढ़ अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। • उन्हें बताएँ कि लोकोक्ति पूर्ण तथा स्वतंत्र वाक्य के रूप में प्रयोग में लाई जाती है, जबकि मुहावरा वाक्य का ही एक अंग होता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ में सही (✓) का चिह्न अंकित कीजिए–

क.	टेढ़ी खीर	–	कठिन काम	☐	जली-कटी सुनाना	☐
ख.	आँचल पसारना	–	स्वागत करना	☐	भीख माँगना	☐
ग.	उँगली उठाना	–	हाथ बढ़ाना	☐	लांछित करना	☐
घ.	खाक में मिलाना	–	नष्ट करना	☐	धूल में मिलाना	☐
ङ.	कमर कसना	–	कमर को रस्सी से बाँधना	☐	तैयार होना	☐
च.	आँखें फेर लेना	–	बदल जाना	☐	आँखें हटाना	☐

2. निम्नलिखित लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए–

क.	घर का भेदी लंका ढाए	•	•	अपराधी होकर भी अपनी अकड़ दिखाना
ख.	जिसकी लाठी उसकी भैंस	•	•	सेवा का फल अच्छा होता है
ग.	सेवा करे सो मेवा पावे	•	•	आपसी फूट से हानि
घ.	एक तो चोरी ऊपर से सीनाज़ोरी	•	•	शक्तिशाली की ही जीत होती है
ङ.	काला अक्षर भैंस बराबर	•	•	सब तरफ़ मुसीबत
च.	आगे कुआँ पीछे खाई	•	•	निरक्षर होना

3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

क. अच्छे दिन आना – ....

ख. जी चुराना – ....

ग. दाल में काला होना – ....

घ. बुढ़ापे की लाठी – ....

ङ. हाथ मलना – ....

4. **निम्नलिखित वाक्यों के लिए उपयुक्त लोकोक्ति लिखिए–**

क. स्वयं अच्छा होने पर सभी अच्छे लगते हैं – ....

ख. आपसी फूट से हानि – ....

ग. सच्चे व्यक्ति को डरने की आवश्यकता नहीं – ....

घ. प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं – ....

ङ. अपराधी होकर भी अपनी अकड़ दिखाना – ....

5. **दिए गए मुहावरों की मदद से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

हाथ मलना	ईद का चाँद होना	बाल-बाल बचना
कान खड़े होना	मन मोहना	रंग में भंग डालना

क. ताजमहल की सुंदरता सभी पर्यटकों का .... है।

ख. शादी का इतना अच्छा कार्यक्रम चल रहा था कि बारिश ने आकर .... दिया।

ग. परीक्षा के समय तो सृष्टि खेलती रही, अब कम अंक आए हैं, तो .... रही है।

घ. बस टकराने से स्कूटर पर सवार व्यक्ति .... बचा।

ङ. अचानक रास्ते में साँप को देखकर मेरे .... गए।

च. जबसे अरुणिमा का विवाह हुआ है, वह तो .... गई है।

6. **शरीर के अंगों से संबंधित कोई चार मुहावरे लिखिए-**

क. ....

ख. ....

ग. ....

घ. ....

अपठित गद्यांश पाठ योजना: 26

आज की अवधारणा

छात्रों को अपठित गद्यांश का अर्थ बताते हुए इसे हल करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इस बात से अवगत कराना। साथ ही विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से उन्हें अपठित गद्यांशों का अभ्यास कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग कर भाषा को प्रभावी बनाना जानते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अपठित शब्द का अर्थ समझने में,
- अपठित गद्यांश के लिए आवश्यक बातों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित अपठित गद्यांशों को हल करने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में चिंतन-मनन की क्षमता का विकास करते हुए तर्कपूर्ण उत्तर देने हेतु उन्हें अभिप्रेरित करना।
- उनकी रचनात्मक तथा कल्पनात्मक क्षमता को विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अपठित गद्यांशों को हल करने के माध्यम से उनकी भाषा पर पकड़ तथा कल्पनात्मकता को विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई गद्यांश पढ़कर सुनाएँ तथा उनसे कहें कि वे इसे ध्यानपूर्वक सुने। तत्पश्चात् उनसे गद्यांश से संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें और उनकी वैचारिक क्षमता को बल प्रदान करते हुए उत्तर देने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित गद्यांशों से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अपठित गद्यांश से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए वीडियो क्लिप्स।
- अपठित गद्यांश संबंधी आवश्यक बातों की जानकारी देता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अपठित गद्यांश' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को मुहावरों के बारे में बताना तथा लोकोक्तियों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, 'अपठित' का अर्थ होता है—जो पहले न पढ़ा गया हो। अत: अपठित गद्यांश वे गद्यांश होते हैं जिन्हें आपने पूर्व में न पढ़ा हो। • इन गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनसे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। • अपठित गद्यांशों का अभ्यास करने से रचनात्मक क्षमता के साथ-साथ सामान्य जानकारी भी बढ़ती है। • उन्हें बताएँ कि अपठित गद्यांश को पढ़कर आप उसे अच्छी तरह समझ सकें, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे— (i) सबसे पहले गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ लेना चाहिए। (ii) पूछे गए प्रश्नों को अच्छी तरह समझकर उत्तर देना चाहिए। (iii) मुख्य बातों को रेखांकित करें। (iv) प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें। (v) भाषा शुद्ध व सरल हो। • इन बातों को और अधिक स्पष्ट करने के लिए पुस्तक से उदाहरण लेकर छात्रों को समझाएँ।

	• उन्हें यह भी बताएँ कि इन गद्यांशों के अभ्यास से आपकी भाषा पर पकड़ मज़बूत होती है तथा व्याकरण का ज्ञान भी बढ़ता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक देश और जाति का योगदान रहता है। संस्कृति के मूल उपादान तो प्रायः सभी सुसंस्कृत और सभ्य देशों में एक सीमा तक समान रहते हैं, किंतु बाह्य उपादानों में अंतर अवश्य आता है। राष्ट्रीय या जातीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान यही है कि वह हमें अपने राष्ट्र की परंपरा से संपृक्त बनाती है, अपनी रीति-नीति की संपदा से विच्छिन्न नहीं होने देती। आज के युग में राष्ट्रीय एवं जातीय संस्कृतियों के मिलन के अवसर अति सुलभ हो गए हैं। संस्कृतियों का पारस्परिक संघर्ष भी शुरू हो गया है। कुछ ऐसे विदेशी प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं, जिनके आतंक ने हमें स्वयं अपनी संस्कृति के प्रति संशयालु बना दिया है। हमारी आस्था डगमगाने लगी है। यह हमारी वैचारिक दुर्बलता का फल है।

   अपनी संस्कृति को छोड़, विदेशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से हमारे राष्ट्रीय गौरव को जो ठेस पहुँच रही है, वह किसी राष्ट्रप्रेमी जागरूक व्यक्ति से छिपी नहीं है। भारतीय संस्कृति में त्याग और ग्रहण की अद्भुत क्षमता रही है। अतः, आज के वैज्ञानिक युग में हम किसी भी विदेशी संस्कृति के जीवंत तत्वों को ग्रहण करने में पीछे नहीं रहना चाहेंगे, किंतु अपनी सांस्कृतिक निधि की उपेक्षा करके नहीं। यह परावलंबन राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप नहीं है।

   क. संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक किसका योगदान रहता है?

   ख. राष्ट्रीय संस्कृति की हमारे प्रति सबसे बड़ी देन क्या है?

   ग. हमारे राष्ट्रीय गौरव को किससे ठेस पहुँच रही है?

   घ. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

   (अ) प्रत्यय बताइए-जातीय, सांस्कृतिक।

   ...., ...

   (ब) पर्यायवाची बताइए-देश, युग।

   ...., ...

   ङ. निम्नलिखित के लिए विलोम शब्द लिखिए-

   (अ) शुरू - ....

   (ब) सुलभ - ....

   (स) आस्था - ....

(द) विदेशी – ....

2. जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज़ है और यह केवल रिवाज़ की ही बात नहीं है, हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु भारत आज जिस दौर से गुज़र रहा है, उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्रित होती हैं।

नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती है और उनके पारस्परिक मिलन में वास्तव में आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अतः जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है। हमारी भाषाएँ जितनी ही तेज़ी से जगेंगी, हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ, बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचें और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच अपने आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन से लेखक हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

क. तीर्थ किसे कहने का रिवाज़ है?

....

ख. अधिक पुण्य किसमें है?

....

ग. जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ क्या होता है?

....

....

घ. भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत कौन है?

....

....

ङ. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

(अ) समानार्थी शब्द बताइए-सौरभ, आकांक्षा।

.... , ...

.... , ...

(ब) विपरीतार्थक शब्द बताइए – भिन्नता, प्रत्यक्ष।

.... , ...

.... , ...

3. प्रजातंत्र के तीन मुख्य अंग हैं–कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। प्रजातंत्र की सार्थकता एवं दृढ़ता को ध्यान में रखते हुए और जनता के प्रहरी होने की भूमिका को देखते हुए मीडिया (दृश्य, श्रव्य और मुद्रित) को प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में देखा जाता है। समाचार–माध्यम या मीडिया को पिछले वर्षों में पत्रकारों और समाचार–पत्रों ने एक विश्वसनीयता प्रदान की है और इसी कारण विश्व में मीडिया एक अलग शक्ति के रूप में उभरा है।

कार्यपालिका और विधायिका की समस्याओं, कार्य–प्रणाली और विसंगतियों की चर्चा प्रायः होती रहती है और सर्वसाधारण में वे विशेष चर्चा के विषय रहते ही हैं। इसमें समाचार–पत्र, रेडियो और टी०वी० अपनी टिप्पणी के कारण चर्चा को आगे बढ़ाने में योगदान करते हैं, पर न्यायपालिका के अत्यंत महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी उसके बारे में चर्चा कम ही होती है। ऐसा केवल अपने देश में ही नहीं होता, अन्य देशों में भी कमोबेश यही स्थिति है।

क. लोकतंत्र के तीन मुख्य अंग कौन–से हैं?

....

ख. किसके बारे में चर्चा कम ही होती है?

....

ग. कार्यपालिका और विधायिका की समस्याओं तथा कार्य–प्रणाली को सर्वसाधारण में पहुँचाने में किसका योगदान रहता है?

....

घ. मीडिया को कौन–से स्तंभ के रूप में देखा जाता है?

....

ङ. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

....

च. 'मीडिया' तथा 'विसंगति' शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(अ) ....

(ब) ....

अपठित पद्यांश　　　　पाठ योजनाः 27

आज की अवधारणा

छात्रों को अपठित पद्यांश का अर्थ बताना तथा उसे हल करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए, इस बात से अवगत कराना। साथ ही विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से उन्हें अपठित पद्यांशों का अभ्यास कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी अपठित गद्यांश को हल करना जानते हैं। उन्होंने आज तक कई कविताएँ भी पढ़ी हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अपठित पद्यांश के अर्थ को समझने में,
- अपठित पद्यांश को हल करने संबंधी आवश्यक बातों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित अपठित पद्यांशों को हल करने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों की रचनात्मक तथा कल्पनात्मक क्षमता को विकसित करना।
- उनकी चिंतन-मनन की क्षमता का विकास कर तर्क पूर्ण उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अपठित पद्यांशों को हल करने के माध्यम से उनकी भाषा पर पकड़ तथा कल्पनात्मकता को विकसित करना।

गतिविधियाँ

विभिन्न प्रकार के विषयों पर आधारित पद्यांश देकर आपसी संवाद के माध्यम से प्रश्नोत्तरी खेलना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित पद्यांशों से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अपठित पद्यांश से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- अपठित पद्यांश संबंधी आवश्यक बातों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अपठित पद्यांश' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को 'अपठित' शब्द का अर्थ स्पष्ट करना तथा पद्यांशों को हल करने संबंधी आवश्यक बातों को समझने का भाव विकसित करना।	• छात्रों, अपठित पद्यांश का अर्थ है—कविता का वह अंश जो पहले पढ़ा न गया हो। अपठित पद्यांश में किसी कविता का एक अंश दिया जाता है तथा उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। • ये पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तकों में दिए गए पाठों से संबंधित नहीं होते। छात्रों को पद्यांशों को पढ़कर इससे संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। • छात्रों को अपठित पद्यांश का महत्व समझाते हुए इस बात से अवगत कराएँ कि इससे उनकी कविता को पढ़ने व समझने की क्षमता का विकास होता है। • अपठित पद्यांश को पढ़कर आप उसे अच्छी तरह समझ सकें, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए, जो इस प्रकार हैं— (i) पद्यांश को पहले दो या तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। जिससे उसका भाव व अर्थ अच्छी तरह समक्ष में आ जाए। (ii) प्रश्नों को अच्छे से पढ़कर उसके अनुरूप उत्तर देने चाहिए। (iii) पद्यांश की पंक्तियों में से प्रश्नों के उत्तर नहीं देने चाहिए, बल्कि अपने शब्दों में गद्य में देने चाहिए। (iv) इसके उत्तर सरल, स्पष्ट और कम शब्दों का प्रयोग करके भावों के साथ व्यक्त करने चाहिए।

	• इन बिंदुओं को और अधिक स्पष्ट करने के लिए पुस्तक से उदाहरण लेकर छात्रों को अच्छी तरह समझाएँ। • उन्हें इस बात से भी अवगत कराएँ कि इन पद्यांशों से आपकी भाषा व काव्य पर पकड़ मज़बूत होती है तथा व्याकरण का ज्ञान भी बढ़ता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!
छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।

क. कवि किसे छोड़ने की बात कर रहे हैं?
(अ) मोह-माया (ब) वैराग्य
(स) सांसारिक सुख (द) बाँहों की शक्ति

ख. कवि किसके समान जीने को कहता है?
(अ) योगियों के (ब) भोगियों के
(स) विजयी व्यक्तियों के (द) राजाओं के

ग. 'भले व्योम फट जाए' का अर्थ है-
(अ) कितनी ही मुसीबत आ जाए। (ब) मूसलाधार वर्षा हो जाए।
(स) आसमान दो टुकड़ों में बँट जाए। (द) आसमान से फूलों की वर्षा हो जाए।

घ. जो बिना झुके मुसीबतों का सामना करते हैं, वे किसका उपभोग करते हैं?

(अ) दुखों का (ब) सुखों का

(स) परतंत्रता का (द) स्वतंत्रता का

ङ. इन पंक्तियों में कवि क्या प्रेरणा दे रहा है?

(अ) आन-बान की रक्षा करने की (ब) जीवन की रक्षा करने की

(स) धन संपत्ति की रक्षा करने की (द) उपर्युक्त सभी

2. कहती है सारी दुनिया जिसे किस्मत,
नाम है उसका हकीकत में मेहनत।
जो रचते हैं खुद अपनी किस्मत, वे कहे जाते हैं साहसी,
जो करते हैं ईश्वर से शिकायत, वे कहे जाते हैं आलसी।
जो रुक गया, मिट गया उसका नामो-निशाँ,
जो चलता रहा, अपनी मंजिल वो पा गया।
खुशी के हकदार हैं वही, जिन्होंने दुख को सहा,
छोड़ के दामन फूलों का, काँटों की राह को चुना।
निराशा का अंधकार मिटाकर, आशा के दीप जलाओ,
छोड़ भाग्य की दुहाई, अपनी किस्मत स्वयं बनाओ।

क. हकीकत में किस्मत किसे कहते हैं?

(अ) सेहत (ब) रहमत

(स) मेहनत (द) सहमत

ख. जो अपनी किस्मत रचते हैं उन्हें क्या कहते हैं?

(अ) साहसी (ब) आलसी

(स) रचयिता (द) मेहनती

ग. खुशी का सच्चा हकदार कौन है?

(अ) सुख लेने वाला (ब) दुख देने वाला

(स) सुख सहने वाला (द) दुख सहने वाला

घ. किसका अंधकार मिटाना है?

(अ) हताशा का (ब) आशा का

(स) निराशा का (द) भाषा का

ङ. किसे छोड़ने पर किस्मत बनती है?

(अ) भाग्य की दुहाई (ब) कर्म की दुहाई

(स) धर्म की दुहाई (द) मर्म की दुहाई

3 नीचे दिए गए पद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए-

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस-उस राही को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर, अनजाने ही हो जाता पथ पर मेल नहीं
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल तय कर लेना कुछ खेल नहीं
दाएँ-बाएँ, सुख-दुख चलते सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस-उस राही को धन्यवाद।
जो साथ न मेरा दे पाए उनसे कब सूनी हुई डगर
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या राही मर, लेकिन राह अमर
इस पथ पर वे ही चलते हैं जो चलने का पा गए स्वाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस-उस राही को धन्यवाद।

क. कवि के अनुसार जीवन कैसा है?

(अ) जीवन खुशहाल है। (ब) जीवन बदहाल है।

(स) जीवन नश्वर है, चंचल है, क्षणभंगुर है। (द) जीवन अस्थिर है।

ख. जीवन रूपी यात्रा में अनुभव आते हैं-

(अ) यात्रा के (ब) सुख के

(स) दुख के (द) सुख-दुख और प्रमाद के

ग. जीवन रूपी डगर पर कौन चलते हैं?

(अ) जो मजबूर होते हैं। (ब) जो मज़दूर होते हैं।

(स) जिनको चलने में आनंद मिलता है। (द) जिनको कुछ पाना रहता है।

घ. कवि किसको धन्यवाद करता है?

(अ) जन्म देने वालों को (ब) शिक्षा देने वालों को

(स) धन देने वालों को (द) स्नेह देने वालों को

ङ. इस पद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है-

(अ) जीवन रूपी यात्रा (ब) कर्म रूपी यात्रा

(स) धर्म रूपी यात्रा (द) मर्म रूपी यात्रा

कहानी-लेखन

पाठ योजनाः 28

आज की अवधारणा

छात्रों का कहानी-लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न करते हुए उन्हें कहानी-लेखन के रूपों से परिचित कराना तथा इनसे संबंधित उदाहरणों का अभ्यास भी कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र पाठ्यक्रम में, पुस्तकालय में तथा पाठ्येतर पुस्तकों में प्रेरक कहानियाँ पढ़ते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों की कहानी-लेखन के प्रति रुचि जागृत होगी तथा वे निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- कहानी-लेखन किस प्रकार किया जाता है, इसे समझने में,
- कहानी-लेखन के रूपों को जानने में,
- कहानी-लेखन के दौरान आवश्यक बातों को ध्यान में रखने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों के भीतर कहानी पठन एवं लेखन के प्रति रुचि जागृत करना।
- छात्रों के भीतर कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता का भाव उत्पन्न करना।
- विभिन्न प्रकार की कहानियों से शिक्षा एवं प्रेरणा ग्रहण करने का भाव जागृत करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों का कहानी-लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न करते हुए उनके भीतर कल्पनात्मकता एवं सृजनात्मकता जैसे भावों का संचार करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई शीर्षक दें तथा सभी विद्यार्थियों को अपनी कल्पना के आधार पर कार्य-पुस्तिका में कोई कहानी बुनने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध प्रेरक कहानियों से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर कहानी-लेखन संबंधी जानकारी को दर्शाते वीडियो क्लिप्स।

- स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाएँ।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवध ारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'कहानी-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को कहानी-लेखन संबंधी जानकारी देते हुए उन्हें स्वरचित कहानी लिखने के लिए अभिप्रेरित करना।	• छात्रों, कहानी-लेखन एक कला है और कला का जितना अभ्यास किया जाए, उसमें उतना ही निखार आता है। • कहानी सुनना या पढ़ना प्रत्येक उम्र के व्यक्ति को अच्छा लगता है, इसलिए इसके महत्व में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं देखी जा सकती। • कहानियाँ कुछ-न-कुछ शिक्षा, संदेश या प्रेरणा प्रदान करती हैं, इसलिए इसे विषय का एक भाग बना दिया गया है। • उन्हें बताएँ कि कहानी-लेखन के प्रायः तीन रूप होते हैं, जो हैं– (i) दिए गए चित्रों को देखकर कहानी लिखना, (ii) दिए गए संकेतों के आधार पर कहानी लिखना तथा (iii) दी गई अधूरी कहानी को पूरा करना। किंतु इस तीसरे रूप को हम इस कक्षा में नहीं पढ़ेंगे। • छात्रों को यह भी स्पष्ट करें कि कहानी-लेखन के दौरान कई बातों को ध्यान में रखना चाहिए, जो हैं– (i) दिए गए चित्रों, संकेतों को ध्यानपूर्वक देखते हुए उनके अनुसार कहानी की रचना करनी चाहिए। (ii) कहानी सदैव भूतकाल में लिखी गई हो। (iii) कहानी संक्षिप्त व रोचक हो। (iv) कहानी में प्रयुक्त वाक्य छोटे तथा प्रभावशाली होने चाहिए।

	(v) लिखी गई कहानी में घटनाओं की क्रमबद्ध ता आवश्यक है। (vi) कहानी के अंत में उससे मिलने वाली शिक्षा का भी उल्लेख होना चाहिए। • अध्यापक पाठ में दिए उदाहरणों को समझाते हुए उनसे अभ्यास-प्रश्न करने को कहें।।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. दिए गए चित्रों के आधार पर संक्षिप्त कहानी लिखिए तथा कहानी से आपको जो भी शिक्षा प्राप्त हुई उसे भी लिखिए–

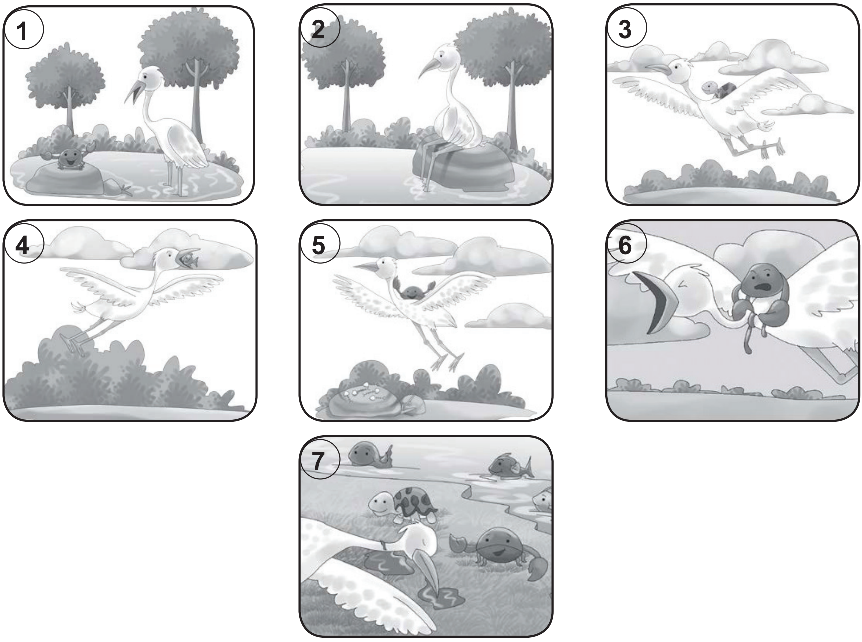

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. दिए गए संकेतों के आधार पर संक्षिप्त कहानियाँ लिखिए–

किसान का इस साल फ़सल कम होने के लिए चिंतित होना – बारहवें महीने के राशन की चिंता सताना – किसान की बहू का चिंता का कारण जानना – बहू का किसान को अनाज के इंतज़ाम के लिए आश्वस्त करना – पूरा वर्ष आराम से निकलना।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

पत्र-लेखन

पाठ योजनाः 29

आज की अवधारणा

छात्रों को पत्र-लेखन के बारे में बताना। पत्र के दोनों प्रकार औपचारिक व अनौपचारिक को समझाना। उनके प्रारूप से अवगत कराना तथा पत्र-लेखन करते समय ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातें समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि पत्र-लेखन द्वारा हम अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- पत्रों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- पत्र-लेखन संबंधी आवश्यक बातों को समझने में,
- अनौपचारिक व औपचारिक पत्रों के बारे में जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को दैनिक जीवन में पत्रों की उपयोगिता समझाना।
- औपचारिक व अनौपचारिक पत्रों की महत्ता बताना।
- पत्र-लेखन की योग्यता विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में पत्र-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अपने निर्देशन में अध्यापक पत्र के प्रारूप के अनुसार अपने सहपाठी अथवा मित्र को अंतर्देशीय पत्र लिखकर पत्र-पेटिका में डालने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध पत्र-लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर पत्रों के उदाहरण संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में पत्रों के प्रकार व आवश्यक बातों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'पत्र-लेखन' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को पत्र-लेखन के बारे में बताना तथा पत्रों के प्रकार के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, पत्र-लेखन एक कला है। इसे अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। • पत्र में लेखक और पाठक के मध्य आत्मीयता आरै सामीप्य स्थापित होता है। साथ ही हम अपनी समस्याओं के बारे में अनेक अधिकारियों को पत्र द्वारा सूचित कर सकते हैं। • पत्र-लेखन करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है। जो इस प्रकार से हैं– • (i) पत्र की भाषा सरल एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। • (ii) पत्र के माध्यम से उसके लिखने का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। विषय से भटकना नहीं चाहिए। • (iii) पत्र में अपने विचारों, भावों और सूचनाओं आदि को कम से कम शब्दों में लिखना चाहिए। • (iv) पत्र स्वयं में प्रभावशाली होना चाहिए। ऐसी शैली का प्रयोग करना चाहिए जिसमें रोचकता और उत्सुकता का भाव हो। • छात्रों को बताएँ कि पत्र दो प्रकार के होते हैं–औपचारिक तथा अनौपचारिक। • उन्हें बताएँ कि पहले हम औपचारिक पत्रों के बारे में जानेंगे। ये पत्र विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यालय के अधिकारियों, अखबार के संपादकों, प्रधानाचार्य आदि को लिखे जाते हैं। इनमें प्रार्थना-पत्र, व्यावसायिक पत्र तथा कार्यालयी पत्र आदि आते हैं।

	• आजकल हमारे पास बात करने के एवं हाल-चाल जानने के अनेक आधुनिक साधन उपलब्ध हैं, किंतु फिर भी इन पत्रों की महत्ता है। जब आप विद्यालय नहीं जा पाते, तब अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र लिखना पड़ता है। सरकारी व निजी संस्थाओं के अधिकारियों को अपनी समस्याओं आदि की जानकारी देने के लिए पत्र लिखना पड़ता है। • फ़ोन आदि पर की गई बातचीत अस्थायी होती है। इसके विपरीत लिखित दस्तावेज स्थायी रूप ले लेता है। • अब पाठ से कोई औपचारिक पत्र का उदाहरण लेते हुए उसके प्रारूप से छात्रों को अवगत कराएँ। • उन्हें बताएँ कि ये पत्र नियमों में बँधे होते हैं तथा इनमें नपी-तुली भाषा का प्रयोग किया जाता है। • अब अनौपचारिक पत्र को लेते हुए उन्हें बताएँ कि इसके अंतर्गत उन पत्रों को रखा जाता है जो हम अपने मित्रों एवं सगे-संबंधियों को लिखते हैं इसलिए इन्हें निजी या पारिवारिक पत्र भी कहते हैं जैसे-बधाई-पत्र, निमंत्रण-पत्र आदि। • छात्रों को स्पष्ट करें कि इन पत्रों का आधार व्यक्तिगत संबंध होता है। इसलिए इन पत्रों में मन की भावनाओं को प्रमुखता दी जाती है, न कि औपचारिकताओं को। • औपचारिक पत्रों की अपेक्षा इन पत्रों में कलात्मकता अधिक रहती है क्योंकि इनमें मनुष्य के हृदय के उद्गार व्यक्त होते हैं। • अब उन्हें पाठ से औपचारिक पत्र का कोई उदाहरण देते हुए उसके प्रारूप से अवगत कराएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित विषयों पर औपचारिक पत्र लिखिए–

क. आपका नाम प्रीति है। आपके विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई एवं अन्य गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. निम्नलिखित विषयों पर अनौपचारिक पत्र लिखिए–

क. आप स्नेहा हैं। आपकी मित्र प्रांजल राजस्थान के एक आवासीय विद्‌यालय में पढ़ती है। उसके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई का हाल पूछते हुए एक पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ख. आपका मित्र टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए चुन लिया गया है। इस खुशी के अवसर पर उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ग. आप अपने दादा-दादी जी की वर्षगाँठ धूमधाम से मनाना चाहते हैं। परिजनों को पत्र लिखकर आमंत्रित कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अनुच्छेद-लेखन

पाठ योजनाः 30

आज की अवधारणा

छात्रों को अनुच्छेद-लेखन की जानकारी देते हुए अनुच्छेद लिखने की विधि से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि विषय से संबंधित सारी बात एक ही अनुच्छेद में कही जाती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में अनुच्छेद-लेखन के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- अनुच्छेद-लेखन क्या है, इस बात को जानने में,
- अनुच्छेद-लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाए, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अनुच्छेद-लेखन के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।
- अनुच्छेद-लेखन की उपयोगिता तथा महत्व को समझाना।
- अनुच्छेद-लेखन की विधि को भली-भाँति समझते हुए किसी भी विषय पर अनुच्छेद लिखने का भाव उत्पन्न करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अनुच्छेद-लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करते हुए उन्हें किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने के लिए अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई चित्र दिखाकर उस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अनुच्छेद-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित अनुच्छेद-लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अनुच्छेद-लेखन की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- अनुच्छेद-लेखन की विधि को दर्शाते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को अनुच्छेद-लेखन के संबंध में बताना तथा उसकी लेखन-विधियों से परिचित कराना।	• छात्रों, अनुच्छेद का अर्थ है—परस्पर संबंध। वाक्यों का ऐसा समूह, जिसमें किसी विषय का एक उपविभाग स्वतंत्र रूप से समझाया गया हो। किसी भी विषय पर अपने विचारों को प्रकट करना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। • अनुच्छेद-लेखन की परिभाषा को समझाकर छात्रों को अलग-अलग विषयों पर अपने विचार प्रकट करने को कहें। • उन्हें बताएँ कि अनुच्छेद-लेखन, निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें हर वाक्य मूल विषय से जुड़ा हुआ होता है। अनावश्यक विस्तार के लिए अनुच्छेद में कोई स्थान नहीं होता। • अध्यापक बताएँ कि अनुच्छेद में मुहावरे के प्रयोग से उनकी भाषा अधिक प्रभावशाली बन जाती है। • छात्रों को बताएँ कि अनुच्छेद-लेखन में हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए। जो इस प्रकार हैं— (i) अनुच्छेद की भाषा सरल व वाक्य छोटे होने चाहिए। (ii) निबंध की तरह विषय की भूमिका नहीं बनानी चाहिए बल्कि सीधे विषय पर आना चाहिए। (iii) इसमें केवल मूल बिंदुओं पर ही चर्चा करनी चाहिए। (iv) इसमें पुनरावृत्ति से बचना चाहिए। (v) अपने विचारों को क्रमबद्ध तरीके से लिखना चाहिए। (vi) शब्दों की समय-सीमा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। • अध्यापक स्वयं छात्रों को अलग-अलग विषय देकर अनुच्छेद लिखने के लिए कहें और बताएँ कि उस विषय को सुनते ही उनके मन में जो विचार आए हैं, उन्हें लिखते जाएँ। इससे छात्र अनुच्छेद-लेखन को भली-भाँति सीखेंगे।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 100-125 शब्दों में अनुच्छेद लेखन कीजिए–

क. महँगाई और भ्रष्टाचार की समस्या

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ख. सोशल नेटवर्किंग साइट्स

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ग. राष्ट्र के प्रति युवाओं का कर्तव्य

....

....

....

....

....

....

....

घ. व्यापार पुस्तक मेला–2018

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. निम्नलिखित संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए–

क. जब मैंने नाटक में अभिनय किया

- पहली बार भाग लेने पर घबराहट होना।
- नाटक प्रारंभ होने के कुछ देर में ही मुझमें आत्मविश्वास आ गया।
- संवादों को स्पष्ट रूप में बोला।
- प्रधानाचार्य, अध्यापकों और मित्रों द्वारा प्रशंसा मिलना।
- नाटक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना।

ख. काश ! मैं पक्षी बन जाता

- आसमान में उड़ते रंग-बिरंगे पक्षी सदैव मन को मोहित करते हैं।
- मेरे घर के बरामदे में एक बुलबुल अकसर आया करती थी।
- मैं शहर का पक्षी नहीं बनता क्योंकि वहाँ प्रदूषण है।
- मैं पिंजरे में बंद पक्षी नहीं बनना चाहता।
- न पढ़ाई की चिंता, न डाँट का डर, न ही कोई तनाव होता।

निबंध-लेखन पाठ योजना: 31

आज की अवधारणा

छात्रों को निबंध-लेखन की जानकारी देते हुए निबंध को लिखने की विधि से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि निबंध के भीतर कई अनुच्छेद शामिल होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- निबंध-लेखन क्या है, इस बात को जानने में,
- निबंध-लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाए, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों के भीतर निबंध-लेखन के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।
- निबंध-लेखन की उपयोगिता तथा महत्व को समझना।
- निबंध-लेखन की विधि को भली-भाँति समझते हुए किसी भी विषय पर निबंध लिखने का भाव उत्पन्न करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में निबंध-लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करते हुए उन्हें किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने के लिए अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई चित्र दिखाएँ तथा उस पर अपने विचार लिखते हुए उन्हें निबंध-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित निबंधात्मक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर निबंध-लेखन की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- निबंध-लेखन की विधि को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को निबंध के लेखन के संबंध में बताना तथा उसकी लेखन-विधियों से परिचित कराना।	• छात्रों, निबंध-लेखन हिंदी की महत्वपूर्ण विधा है। निबंध का अर्थ है—बँधी हुई रचना। इसमें कई अनुच्छेद होते हैं। • निबंध-लेखन एक कला है। अच्छे निबंध लिखने के लिए सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। • इसमें अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग से सीमित शब्दों में व्यक्त करना चाहिए। • निबंध-लेखन के दौरान निबंध को तीन भागों में बाँटा जाता है—आरंभ (भूमिका या प्रस्तावना), मध्य भाग (विषय-वस्तु कर प्रस्तुतीकरण) तथा अंत (उपसंहार)। • सर्वप्रथम 'आरंभ' के बारे में उन्हें बताएँ कि कोई भी निबंध तभी प्रभावशाली और आकर्षक होगा, जब उसका आरंभ अच्छा होगा। इसके लिए निबंध का प्रारंभ काव्य-पंक्ति, दोहे अथवा सूक्ति से किया जाना चाहिए • निबंध का मध्य भाग उसका प्राण है। इसी में निबंध के विषय (विषय-वस्तु) को पूर्ण रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए-

क. विद्‌यार्थी के दायित्व

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ख. कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ग. मेरी माँ, मेरा आदर्श

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

घ. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

रचनात्मक कार्य

पाठ योजनाः 32

आज की अवधारणा

छात्रों को रचनात्मक गतिविधियों जैसे—चित्र-वर्णन, भाषण, वार्तालाप, संवाद, कविता वाचन, घटना सुनाना तथा डायरी लेखन से संबंधित जानकारी प्रदान करते हुए इनके उदाहरणों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित चित्रों को देखकर कई विचार उमड़ते हैं। वे विद्यालय के मंच पर प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों तथा टी.वी. पर नेताओं, प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति का भाषण सुनते आ रहे हैं। वे समय-समय पर वार्तालाप तथा संवाद भी करते रहते हैं। छात्र किसी कविता तथा किसी घटना के घटित होने को पढ़ते तथा सुनते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में रचनात्मक गतिविधियों को करने के प्रति रुचि जागृत होगी तथा वे निम्न में सक्षम हो सकेंगे—

- चित्र वर्णन की शैली कल्पनाओं को किस प्रकार साकार करती है?
- रचनात्मक गतिविधि के अंतर्गत भाषण किस प्रकार महत्वपूर्ण है तथा इसे तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- वार्तालाप तथा संवाद-रचना के दौरान किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए?
- कविता वाचन तथा किसी घटना का वर्णन किस प्रकार किया जाता है?
- 'डायरी-लेखन' के दौरान किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है—

- चित्र-वर्णन के माध्यम से लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में छात्रों को सक्षम बनाना।
- रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से उनके भीतर आत्मविश्वास जागृत करना।
- भाषण के माध्यम से विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।
- दैनिक जीवन में वार्तालाप तथा संवाद के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- कविता वाचन एवं घटना सुनाने के दौरान ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातों पर ध्यान देकर इन्हें सशक्त रूप से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- अपने दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को डायरी में लिखकर संजोकर रख सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में रचनात्मक गतिविधियों के प्रति रुचि जागृत करते हुए उनकी रचनात्मकता तथा कल्पनाशक्ति को बल प्रदान करना तथा उनके भीतर आत्मविश्वास उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

- शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से उन्हें विभिन्न दृश्यों को चित्र-वर्णन करने का कहना।
- किसी विषय पर अध्यापक व छात्रों के मध्य संवाद।
- अध्यापक छात्रों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटें, तत्पश्चात् प्रत्येक छात्र को अपने-अपने समूह में कोई कविता अथवा घटना सुनाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध चित्रात्मक पुस्तकें।
- आपसी चर्चा तथा राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री के द्वारा दिए गए देश को संबोधित भाषण की वीडियो क्लिप्स।
- समाचार में प्रकाशित विभिन्न नेताओं के भाषण।
- दो व्यक्तियों के मध्य किसी वर्तमान सामाजिक समस्या पर किया गया संवाद संबंधी चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'रचनात्मक कार्य' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को रचनात्मक कार्य के अंतर्गत आने वाली गतिविधियों से परिचित कराते हुए उनके भीतर आत्मविश्वास एवं कल्पनाशक्ति का विकास करना।	• छात्रों, भाषा विचारों के आदान-प्रदान का एक साधन है। हम अनेक शैलियों में अपने मनोभावों को प्रकट कर सकते हैं जैसे—भाषण, कविता, कहानी, डायरी-लेखन आदि। ये सभी विधाएँ 'रचनात्मक गतिविधियाँ' कहलाती हैं। • छात्रों, किसी भी चित्र को देखकर उसमें निहित क्रियाओं, स्थितियों और भावों का वर्णन 'चित्र-वर्णन' कहलाता है। • इसके द्वारा हमारी कल्पनात्मकता बढ़ती है तथा लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति सुंदर और सुदृढ़ होती है। • रचनात्मक गतिविधि 'भाषण' मौखिक अभिव्यक्ति का एक उत्तम साधन है।

पाठ की समाप्ति	• अच्छा भाषण देने के लिए हमारा अच्छा श्रोता होना भी आवश्यक है। • भाषण देते समय जिन मुख्य बातों को ध्यान में रखना चाहिए अध्यापक उन्हें पुस्तक से वाचन करके स्पष्ट करें। • अध्यापक छात्रों को यूट्यूब पर देश को संबोधित किसी भाषण को दिखाएँ। • भाषण के पश्चात् उन्हें रचनात्मक गतिविधि 'वार्तालाप' के बारे में बताएँ कि दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाली बातचीत को वार्तालाप कहते हैं। • इसमें सरलता तथा आत्मीयता का भाव झलकना चाहिए न कि बनावटीपन। • पाठ से इसका उदाहरण स्पष्ट करें। • रचनात्मक गतिविधि 'संवाद' के बारे में उन्हें बताएँ कि किसी भी विषय पर विशेष प्रकार की बातचीत संवाद कहलाती है। • इसमें बातचीत की अपेक्षा औपचारिकताओं का निर्वाह करना पड़ता है तथा यह क्रमबद्ध होती है। • पुस्तक से संवाद का उदाहरण देते हुए इस गतिविधि को स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, उन्हें कविता वाचन के बारे में बताएँ कि कविता मौखिक अभिव्यक्ति का एक अंग है। • कविता की विषय-वस्तु, भाषा तथा स्तर सुनने वालों के स्तर के अनुकूल ही होना चाहिए। • कविता में स्वर रस के अनुरूप हो तथा भावों के उतार-चढ़ाव, लय, यति-गति आदि का ध्यान रखा जाना चाहिए। छात्रों को पाठ से किसी कविता का वाचन करके सुनाएँ। • रचनात्मक गतिविधि 'घटना सुनाना' के बारे में बताएँ कि जीवन में अनेक घटनाएँ घटती हैं, जिन्हें कहा या सुना जा सकता है। • कहने वाला बात इस प्रकार कहे कि सुनने वाले की आँखों के समक्ष चित्र-सा खिंच जाए। साथ ही कहने वाले को घटना का क्रम याद हो। • छात्रों को उन्हें अपने द्वारा देखी किसी घटना का वर्णन करने को कहें।

	• अंततः उन्हें 'डायरी-लेखन' के बारे में बताएँ कि इसे 'दैनंदिनी' भी कहा जाता है। • छात्रों को बताएँ कि दिनभर की घटनाओं का लेखन हमारी सोच को व्यवस्थित व सकारात्मक बनाता है। डायरी ऐतिहासिक तथ्यों को सामने लाने का कार्य करती है तथा जीवन की भाँति व्यक्तिगत अनुभवों के कारण यह तथ्यों का करीब से मूल्यांकन करवाती है। • अध्यापक छात्रों को प्रेरित करें कि वे अपनी दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को संक्षिप्त रूप में डायरी में अभिव्यक्त करें।
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. बस कंडक्टर और सवारी के बीच एक-दूसरे से उलझने की स्थिति का संवाद लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. विद्यालय में आपका पहला दिन कैसा रहा? अपने अनुभव को डायरी में अंकित कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनका वर्णन कीजिए।

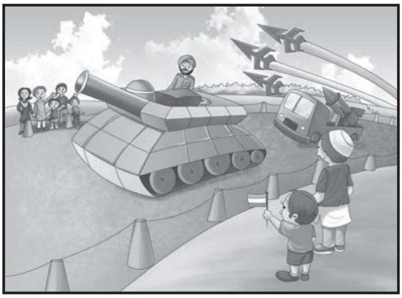

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....